सौंपे [illegible] और [illegible] गति में ।।

[illegible] के [illegible]

मन वच कर्म ~~नीति है~~

मन वच कर्म [illegible] उन्हीं में [illegible] ।।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

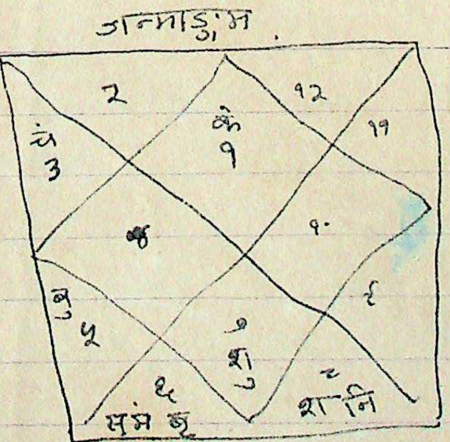
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सम्वत् २०१४ ॥ शाके: १८७९ ॥ आश्वीन मासे। कृष्णपक्षे षष्ठम्याम् । भौमवासरे ॥ आर्द्रा नक्षत्रे तदुपरि पुनर्वसु नक्षत्रे इष्टकाल ३१।३४ प्रथम चरण । १७ सितम्बर १९५७ समय रात को



सौंपे हृदय (मुझे) [illegible] और [illegible] जागते में ॥

[illegible] के [illegible]

मन वच कर्म नीति हैं

मन वच कर्म निर्मल हैं उन्हीं में निर्मोही ॥

[illegible] दीजिये [illegible]

[illegible]

श्रुति [illegible] (पृ०)
श्रुति [illegible] मन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

भजन

* विनय करौं अति नम्र भावते, बात हमारी मानिये ॥

मनुआँ, स्वामिनि ही को गुनिये ॥

* साँची हितू तुम्हारी वेही, और नहीं अपनैये ॥

भवबन्ध को निरन्तर रत है उनही में रमि जैये

कल्मष-दलन विमल मन्त्र उनके भवभय [illegible]

मुनिदुर्लभ भवभीति विनाशन, दर्शन उनके पैये

श्वेत कंज पदपद्म मनोहर मन मधुकर ह्वै अँये

सत्य सदानन्द पान करि अपनो आपु भुलैये ॥

भक्त भवन भवसिन्धु पोत, पदपङ्कज में निमैये

संसृति द्वन्द्व दुःख व्याकुल अति प्रेमाद्र [illegible]

॥ मधुबिन्दो ॥

स्वामिनी! प्रेम लेहु अपनाय ॥

बुद्धि में मन के लय हो जाने पर सब वृत्तियों का निरोध करनेवाली जो स्थिति है, उसका नाम है ब्रह्मविद्या और वह गुरुजनों का पालन करने से ही उपलब्ध होती है।

(सत्संगमाला म.)
उवाच "[illegible]"

ॐ नमः भगवते वासुदेवा[य]

ॐ नमो नरसिंह नमस्ते

श्री: स्वामि चैतन्य:

रे मन कृष्ण नाम कहि लीजै।

गुरु के वचन अटल करि मानहि, साधु समागम कीजै॥
पढ़िये गुनिये भक्ति भागवत, और कहा कथि कीजै।
कृष्णनाम बिन जन्म बादही, बिरथा काहे जीजै॥
कृष्ण नाम रस बह्यो जात है, तृषावन्त ह्वै पीजै।
सूरदास हरि शरण ताकिये, जन्म सफल करि लीजै॥

रे मन मूरख जन्म गवायो।

करि अभिमान विषय से रच्यो, श्याम शरण नहिं आयो।
यह संसार फूल सेमर को, सुन्दर देख लुभायो।
चाखन लाग्यो रुई गई उड़, हाथ कछू ना आयो।
कहा भयो अबके मन सोचे, पहिले नहीं कमायो।
सूरदास भगवन्त भजन बिन सिर धुनि धुनि पछितायो॥

तेरे दया धरम न हिं
धा * × २ धा * २ नी * × २ धा * मा *

मन में
मा मा गा *

कागज की तो नाव बनाई छोड़
मा * × ४ धा * × ४ मा * धा * नी * ~~[illegible]~~

दई जल चल में
नी * × २ धा * मा * मा * धा * नी * धा *

धर्मी धर्मी पार उतर गये पा पी
रें * × ४ नी नी * धा * × ४ धा * नी *

डू बे जल में
धा * मा * मा मा गा *

फिर पहिले से बजाइये

श्री स्वामिने नमः

पहिला सप्तक   दूसरा/बीचवाला सप्तक

ग ध नि रें गं म ध

ग सा म

स्थायी

मो ह न तो री वं ________

म* ग* म ध* नि* ध* नि* सां रें*

री ई ई ए री हाँ आ री

साँ ध* नि* सां नि* ध* म* म

अन्तरा

सु नु स खी अ ए सी व जी ई

ध* साँ साँ सां साँ गं* रें* सां ध* नि*

मो रे र ही र ही रजि पा

साँ साँ साँ ग* सां ग* रें* साँ

घ व रा आ म

साँ नि* ध* म* म

अन्तरा

वं— शी व जा व त जि या
रें* नि* रें* गं* मं मं मं धं* धं*

न न या आ व त नं न्द न
मं ध* सां सां गं* मं म* गं* मं

न न्द न ब्र ज रा आ ज
गं* रें* सां नि* ध* म* म:

भैरवी

× 1 0 3
मोहन तोरी बंशी हरी हाँरी ॥ मो.॥
सुनु सखी सैली बजी मोरे रहि रहि जिया घबड़ाय ॥मो.॥
बंशी बजावत जिया घबड़ावत नन्द नन्दन ब्रज राज ॥मो.॥

ईमन राग

सबही तीवर स्वर गहाँ वादि गन्धार सुहाय।
अरु सम्बादि निषाद ते ईमन राग कहाय ॥१॥

(ताल ३)

स्थायी | मोरी नाव करु पार सँवलिया।
गहरी नदिया नाव पुरानी ॥मोरी०॥

अन्तरा | सूझ पड़त नहीं जुगत कछु आव-
शरणा गत हूं नाथा ते होऊ केवट है मतवार ॥

सां निं धप मप गम पा पा रेगरे सा ॥

गजा रूक

तु कितनी अच्छी है तु कितनी भोली है प्यारी २ है ओ मां २
ये जो दुनिया है ये वन है कांटों का तु फुलवारी है ओ माँ २
दुखने लगी है मां तेरी अखियां, मेरे लिये जागी है तु सारी २ रतियां
मेरी निंदिया पे अपनी निंदिया भी तुने वारी है ओ मां २
अपना नहीं तुझे सुख दुख कोई, मै मुस्काया तु मुस्काई मै रोया तू रोई
मेरे हंसने पे मेरे रोने पे तु बलिहारी है ओ माँ २
मां बच्चो की जां होती है, वो होते है किस्मत वाले जिनके मां होती है,
तू कितनी सुन्दर है तु कितनी शीतल है न्यारी २ है ओ माँ २
=

मेरे राजा तुमको ढूंढू मै कहां मेरे लाल तुमको ढूंढू मै कहां
तु क्या जाने तेरे घर से चले जाने पर, क्या बीती मेरे दिल पर प्यारे
तेरी माता बहना तेरे गम मे रो रो मर जायेगे सारे
आजा वापस आजा मेरे प्यारे
हम जग में क्या है केरा इक सपना मेरा वह भी टूटा
करे दुनिया मेरी आखों के तारे तु क्यों रुठा
=

स्थायी - मैंने देखीरी आज मोहनकी हसनि ।

अन्तरा- आरुनाई अधरन की अद्भुत, मुतियन लार दर ब्रु
पांतीरी दसन ।। मैंने०।।
या शोभा के दृग हैं प्यासे,
पीवन लागे भरि-भरि के जसन ।। मैंने ।।
चन्द सखी भज बाल कृष्ण छवि-
मनमोहन से लागीरी लगन ।। मैंने० ।।

सरगम = ध ध ध नि सां सां धनी सांनी ध प
ह न की ह स नि मैं ने दे खी री आ
मप गम
ऽज मो ओ

सरगम -	ध	ध	ध	नि	सां	सां	ध	नी
बोल -	ह	न	की	ह	स	नि	मैं	ने
विमात्रा -	१	२	३	४	५	६	७	८
चिन्हताल -	×	×			२			

दे खी री

सरगम -	सां	नी	ध	प	म	प	ग	म
बोल -	दे	खी	री	आ	ऽज	मो		ओ
चिन्हताल -	०				३			
मात्रा -	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

भाई बहन,

आ जरा आज तो मुस्करा ले
ये तो थी खुशी हो रही है जाने मन वस यही जिन्दगी है,
आ तो हाले दिल पर कोई प्यार की रागनी छेड़ दे
ये जहां ये समां कल कहां जाने मन फिर मिले न मिले
बेरवुदी में जो हुआ सो हुआ आज तक के लिये माफ है,
गम नहीं है हर किसी बात का दिल अगर आपका साफ है,
ले उठा हाथ में जाम ले जाम आंखों के हैं थाम ले
और पी ह दिल रुबा होश का आज मत नाम ले
दस्तूर जमाने का ये बदला नहीं जाता
हाय हर फूल यहाँ पावों से मसला नहीं जाता
हम जान भी उनको दे दें जो प्यार के मतवाले
हम जान भी उनकी लेलें जो तीर ह्रदय पर डाले
ओ दिल फेंक हमने देखे देखे दिल बर तो न पाया
जिह प्यार के दिवाने वो प्यार तो न पाया
बाजार में जो मजनू कहता है लैला २
खूब जानो है कितना है दिल का मैला
जीयें जी भर इनसे मन के हैं बड़े काले
ओ धन के नशे में कोई फिरता है मुस्कराता
खाली है जेब जिसकी वो भी अकड़ दिखलाता

गजल

स्थाई। ऐ दर्दे दिल किसी दिन होगा जुदा न हमसे।
आबाद यह मकां है तेरे ही दम कदम से॥

अन्तरा। हम गमजुदों का रोना दुनियां को एक हंसी है।
हाँ इश्क के रवूं संभलना गिरना न चश्म नम से॥
ऐ हसरतो हया भी होती मिजाज पुरसी।
यह हाले दिल कहेंगे फुरसत मिली जो गम से॥
'बेताब' इस जहाँ में कोई नहीं किसी का।
देते हैं अब दिखाई अपने भी मुझको गम से॥

७ नं के बाद से अलापना चाहिये।

चाबी नं०	१५	१४	१२	११	७	८	
बोल	ऐ	द	र्दे	दिल	कि	सी	
चाबी नं०	१४	१५	१२	१४	१५	१४	१२
बोल	दिन	हो	गा	जु	दा	न	ह
चाबी नं	१२	८					
बोल	म	सेSSS					

अन्तरा

चाबी नं	१६	१८	१४	१३	२१	१८
	हमगमजु	दों	का	रोSS	नाSS	दुनियाँ

कुछ आइना हमने बोली चाहत की मीठी बोली
इसतरह से जो बोली हमसे कोई भी गोली
दिल ऐसा जादी अपना मेरा जो कहीं खोले
धीरे 2 मोहब्बत जवाँ होगयी
बात इतनी बड़ी दास्ताँ होगयी
चुपके 2 ये कहती है नीची नजर
तुमको बनठन के जाना है साजन के घर
आज किस्मत बड़ी मेहरबाँ होगयी
आप क्या जान कर मुझसे आकर मिले
फूल अरमान के दिल में इतने खिले
इश्क की जिन्दगी गलीसताँ होगयी
कर चुके आप मुझसे अहद वफा
फर्क इतना ही दोनों में बाकी रहा
आप दिल बनके गये और मैं जाँ होगयी
=

चाबी नं	१६	१२	१६
बोल	ऽऽ	ओ एक हँसी	है ऽ

=

गजल

~~सुनले मेरा अफसाना ऐ ...~~

स्थायी - | नहीं अच्छा तेरा एक बारगी रूपोश हो जाना।
| कहीं रुस्वा न कर डाले मेरा मदहोश हो जाना॥

अन्तरा — तुम्हें मेरी कसम तुम ही कहो कि सब्र क्यों कर हो।
मेरा तुझ पर फिदा होना तेरा रूपोश हो जाना॥
ओ ऐ सङ्ग दिल तुझको कभी पै मोम कर देगा।
तेरा जुल्मो सितम करना मेरा खामोश हो जाना
अगर इस बुत से मिलना चाहे तो पहिले अजल से मिल
'निजामी' कुछ नहीं दुश्वार है आगोश हो जाना॥

स्थायी

चाबी नं	१४	१२	११	६	९	११
बोल	नहीं अच्छा	तेरा एक	बारगी	रू	पोश	हो
चाबी नं.	६	९				
बोल	जा	नाऽऽ				

चाबी नं	१६	१२	१६	१४
बोल	तुम्हें मेरी कसम तुम ही कहो	कि सब्र	क्यों	कर होऽऽ

कन्हैया तुम्हें एक नज़र देखना है।
जिधर तुम छिपे हो उधर देखना।
अगर तुम हो दीनों की आहों के आशिक।
तो आहों का अपनी असर देखना है॥
उबारा था जिस हाथ ने ग्राह गज को।
उसी हाथ का अब हुनर देखना है॥
विदुर भीलनी के जो भाग तुमने देखे
तो इनका भी भाग देखना है
रखते हैं रग बिन्दु तुमसे ये उम्मीद।
तुम्हें अपनी उल्फत में तर देखना है

आजा तुमको पुकारे मेरा प्यार मौला करम हो आजा तो मिटा हूँ तेरी याद में
आखिरी पल है आखिरी आस ये तुझे ढूंढ रही है,
डूबती साँसे बुझती निगाहें सामने आजा इक बार
दोनों जहाँ की मैंने चढ़ा दी मैंने याद में तेरी
अब तो चली आ इस पार इतने जुगों तक इतने दुखों को
कोई सहके देखेगा तेरी करतूत किसी की कोई कहना
कबूल है तेरा इकरार तेरी नजर की ओट जैसे
तो डूबे प्यार मिलन की तेरे वादन की ओर गिरे
═

भजन (ताल दादरा)

स्थायी | प्रभो डालिये जान बेजान हैं हम।
तुम हो ज्ञान के रूप अज्ञान हैं हम॥

अन्तरा — इसी एक नाते हम को उबारो।
तुम्हारी ही भक्तों के सन्तान हैं हम॥
पिताजी तुम्हें ध्यान रहता हमारा।
बड़ा ही गजब है कि बेध्यान हैं हम॥
सुना है कि तुम सब हो और शुद्ध हो।
प्रकट क्यों न हो जाओ हैरान हैं हम॥

७ वें लेख अलापना चाहिये

स्थायी

चाबी नं.	१०	६	१० ७	६	७	५	७	१०
बोल	प्र	भोऽडा लि ये ऽजान		बे	जा	न	हैं ऽ	हम

अन्तरा

चाबी नं.	१४	११	१२	६	७
बोल	इसी एक नाते से	हम	को	उबा	रोऽ

ओ मतिमन्द अज्ञानी नकल ही भक्ति बिन खोया।
बिगारा काम अपने को रहा गाफिल सदा सोया॥
पड़ा परदा जहालत का अकल की आँख फूटे।
सुधा के खेत में तैंने ज़हर का बीज क्यों बोया॥
विषय में होके मतवारा किया बरबाद (नर तन) जीवन को।
विमुख निज ईश से होके वृथा ही भार ही ढोया॥
भलाई खल्क और खालिक तुझे भेजा था मालिक ने।
मगर अफसोस उलटा ही चलन है जन्म का गोया॥
जो करना फर्ज था तेरा किया उसको न क्यों शाख।
चलन आखिर को दुनिया से हो फिर बलदेव क्यों रोया॥

सफर

जिन्दगी का सफर है ये कैसा सफर कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं।
है ये कैसी डगर चलते है सब मगर
जिन्दगी को बहुत प्यार हमने दिया
मौत से भी मोहब्बत निभायेंगे हम
रोते रोते जमाने में आये मगर हंसते हंसते जमाने से जायेंगे
जायेंगे पर किधर है किसे ये खबर
ऐसे जीवन भी है जो जिये ही नहीं
जिनको जीने से पहले मौत आ गई
फूल ऐसे भी है जो खिले ही नहीं

भजन

स्थायी | मगन ईश्वर की भक्ती में अरे मन क्यों नहीं होता।

अन्तरा – जो इच्छा है तुझे कर जांय सारे मैल पापों के ॥

(७ नम्बर से अलापना चाहिये)

स्थायी

चावी नं	७	११	१२	११	६
बोल	म	गऽन	ईऽऽऽ	श्वरकीऽभ	क्तीऽऽ
चावी नं	~~मेंऽऽ~~ ७	५	४	२	६
बोल	मेंऽऽ	अ	रे	मन	क्योंऽन
चावी नं	१०	६	७		
बोल	हीं	हो	ताऽ		

अन्तरा

चावी नं	१४	१२	१०	६	१०
बोल	जो इच्छा है तुझे कर	जा.	यँ	सा	आ
चावी नं	७	१०	६	७	
बोल	रेऽऽ	मैल पा	पोंऽ	केऽ	

मगन ईश्वर की भक्ति में अरे मन क्यों नहीं होता।
पड़ा आलस्य में खाव रहेगा कब तलक सोता॥
जो [illegible] था है उसे कर जायें जो मैल पापों के।
प्रभु के प्रेम जल में क्यों नहीं अपने को तू धोता॥
विषय और भोग में फँस कर, न कर बर्बाद जीवन को।
दमन कर चित्त की वृत्ति को लगाले योग में गोता॥
नहीं संसार की वस्तु, कोई भी साथ की है तू।
वृथा इसके लिये फिर क्यों समय अनमोल तू खोता॥
कभी उसको ना मिल सकता है फल भव शान्ति कर [illegible]।
भजन के बीज को अन्त: करण में जो नहीं बोता॥
भजन ही एक ऐसा है जो होगा अन्त में साथी।
न मोह कुछ आवेगी न बेटा और कोई पोता॥
भटकता जा बजा नाहक तू किस धन के लिये गालिब।
तेरे हृदय के अन्दर ही बहै आनन्द का सोता॥

जिनको जीने के पहले ही खबर खो गई
है परेशान जरा थक गये चारागर
जीवन से भरी तेरी आंखें मजबूर करें जीने के लिये
सागर भी तरसते रहते हैं तेरे रूप का रस पीने के लिये
तस्वीर बनाये क्या कोई कोई लिखे तुमको पे कविता
रंगो छंदों में समायेगी [illegible] तरह इतनी सुन्दरता
एक धड़कन है तू दिल के लिये, एक जान है जीने के लिये

कारी कारी रे बदरिया छाय रही - मन भाय रही ॥

कारी कारी .....

रैनि अँधेरी कारे बदरा गरजे - बिजुरी चमके चम चम चम चम

पवन चलत सनानानानाना नाना ना - कारी कारी .....

रुम झुम रुम झुम मेघा बरसे आई घटा घन घोर रे

पी पी पपीहा कू कू कोयलिया - शोर मचावे मोर रे

फुवार पड़त घन घना नाना ना कारी कारी ....

प्रथम सप्तक

	रे	ग	म	ध	नी	
सा	०	ग	०	०	०	

का री का री रे ब द रि या

रे * सा रे * गा * गा गा * गा * गा मा * धा *

य छा य रही

मा * गा - गा * रे +

म न भा य रही +

ध * मा * गा ग * रे

फिर पहिले से बजाइये -

मधुवन की सुगंध है सांसों में बाहों में कमल की कोमलता
किरनों का तेज है चेहरे पे हिरनों की है तुझमें चंचलता
आंचल का तेरे तार बहुत कोई जिगर सीने के लिये
सफर
जो तुमको हो पसन्द वही बात कहेंगे
तुम दिन को अगर रात कहो रात कहेंगे
देंगे न आप साथ तो मर जाते हम कभी के
पूरे हुए हैं आपसे अरमान जिंदगी के
हम जिन्दगी को आपकी सौगात कहेंगे
चाहेंगे निभायेंगे सराहेंगे आप ही को
अपनी जबां से आपके जज्बात कहेंगे
हम थे जिनके सहारे वो हुए न हमारे
डूबी जब दिल की नैया सामने थे किनारे
क्या मोहब्बत के वादे क्या वफा के इरादे
रेत की हैं दिवारें जो भी चाहे गिरा दे
है सभी कुछ यहां के दोस्ती है वफा है
अपनी थी कमनसीबी हमको न कुछ मिला है
पु यो दुनिया बेबसी तनहाई फिर भी होगी
वो जिंदगी में कमी वो कमी तो रहेगी

अन्तरा —

रैनि अँ धेरी कारे
रे* x2 रे* गा* x2 म* x2

बदरा गरजै बिजुरी चमके च म
धा* x 6 मा* x2 धा* x3 मा* धा*

च म च म च म प व
नी* धा* मा* गा गा* रे* रे* गा*

न च ल त स नी ना ना ना
गा गा गा गा x3 रे* गा* गा धा* मा*

ना ना नी
गा गा* रे*

फिर पहिले से बजाइये -

पीछे दो सतरें 'रुम झुम' और 'पी पी पपीहा' रैनि अंधेरी की तार पर बजेंगी और "कुवार पड़त" "पवन चलत" पर बजेंगी ध्यान करके बजाइये।

नोट यह गायन स्वरी सप्तक पर बजाकर दिखलाई गई है।

Page 538

हिम्मत

हिम्मत करे इंसान तो क्या हो नहीं सकता
ये आकिले नादान तो क्या हो नहीं सकता
करती हैं जिसे गलियों में बदनाम ये दुनिया
कहती हैं जिसे ~~हसर~~ हसरतें नाकाम ये दुनिया
बन जाये वो अरमान तो क्या हो नहीं सकता
शिकवे बुरी किस्मत के हैं बुजदिल के बहाने
तिनके की तरह तूफ़ान को उड़ा डाला हवा ने
बन जाये तूँ तो क्या हो नहीं सकता

=

~~अ~~ दास्ते

ये रेशमी जुल्फे ये शरबती आँखें इन्हें देखकर जी रहे हैं सभी
जो ये आँखें शरम से झुक जायेगी सारी बातें यहीं बस रुक जायेगी
चुप रहना ये अफसाना कोई इनको न बतलाना इन्हें - - - - - .
जुल्फे मगरूर इतनी हो जायेगी दिल को तड़पायेगी जी को तरसायेगी
ये कर दे जो दिवाना कोई इनको न बतलाना, इन्हें — — —
सारे इनकी शिकायत करते, फिर भी इनसे मोहब्बत करते हैं
ये क्या जादू है जाने फिर चाहे गैरों दिवाले इन्हें - - - . . . . . .

=

Page 529

राम को कहीं नैना न उलझे
उलझे तो उलझे सुलझाये नहीं सुलझे
राम को .... ।

अन्तरा - इन नैनन की मार बुरी है
उलझे तो उलझे सुलझाये नहीं सुलझे
राम को ...... ।

		गं			मं	धं		नीं		रें	गं				
०	०	०	मा	पा	०	०	सां	रें	०	०	०	०	०	०	

(१) राम - पा, क - धा *, रे + - * धा मा * मा, कहीं - गा * × २, नै - मा, ना - धा *

न - नी *, उल + - सा रे * गा *, झे - नी * -

(२) उल - नी *, झे तो - रे × २, उलझे - गा * × २, सुल - रे *, झा - सा, ये - नी *

नन - धा *, न - नी *, हीं, सुल + - सा रे गा *, झे - नी *

नोट - + यहां पर लोचता गमक है अर्थात यहाँ पर उंगलियां इतनी लचकावे कि प्रत्येक पर्दा ठीक बज जावे।

दोरास्ते

छुप गये नजारे ओय क्या बात होगयी

तूने काजल लगाया दिन में रात होगयी

मिल नैना से नैना ओय क्या बात होगयी तूने —

दिलने दिल पुकारा मुलाकात होगयी

कल नहीं आना मुझे न बुलाना कि मारेगा ताना जमाना

तेरे होठों पे रात पे बहाना था गोरी तुमको तो आज नहीं आना था

तु चली आई दुहाई ओय क्या बात होगयी त

मैंने छोड़ा जमाना तेरे साथ होगयी

अम्बुआ की डाली पे गाये मतवाली कोयलिया काली निराली

सावन आने का कुछ मतलब होगा

बादल छाने का कोई सबब होगा

रिमझिम छाये घटाये ओय क्या बात होगयी

तेरी चुनरी लहराई बरसात होगयी

छोड़ जाना नैयाँ पहुँ तेरी पैय्याँ कि तारों की छइयाँ

एक वह दिन था मिलती न थी अंखियाँ

एक यह दिन है तु जागे सारी २ रतियाँ

बनगयी तेरी चकोरी ओय क्या बात होगयी

जिसका डर था वेदर्दी वही बात होगयी तूने — - - - - - -

अन्तरा इन [illegible] [illegible] भार

धा * x2 नी * रे x2 गा * रे * x2

कु री + है

गा * गा * रे * सा नी *

=

बिंदियां चमकेगी चूड़ी खनकेगी, नींद उड़े तो उड़ जाये

कजरा बहकेगा गजरा महकेगा साजन आये तो यह कुल जाये

मैंने माना हुआ तु दिवाना जुल्म तेरे साथ हुआ

मैं कहां से जा के अपनी लोग लशकरा·

ये रंग दुनिया के और दो रास्ते, दो रूप जीवन के माने के वास्ते

इक रास्ता मन्दिर को जाये इक मैखाने को

सोच समझ के पांव रखे समझा ये हर दिवाने को

रस्ता भूल न जाये राही धोखा न खाये

इक जाये मन्दिर को जाये इक जाये मैखाने को

सोच समझ कर पैर रखे इक है ऐसे लोग

जो औरों के खातिर अपना खून बहाते है,

कोई फूल खिलाये कोई कांटे बिछाये दुनिया के दो रास्ते ~~ . . . . .

=

खिलौना

खिलौना जानकर तुम तो मेरा दिल तोड़ जाते हो खिलौना
मुझे इस हाल में किसके सहारे छोड़ जाते हो
खुदा का वास्ता देकर बुलालू दूर हूँ लेकिन
तुम्हारा रास्ता मैं रोक लू मजबूर हूँ लेकिन
कि चल भी नही सकता और तुम छोड़ जाते हो
मिला तुमसे नही कोई मगर अफसोस थोड़ा है
कि जिस गम ने मेरा दामन बड़ी मुश्किल से छोड़ा
उसी गम से मेरा फिर आज रिश्ता जोड़ जाते हो
मेरे दिल से न लो बदला जमाने भर की बातो का
ठहर जाओ सुनो मेहमान हूँ मैं चन्द रातो का
चले जाना अभी से किस लिये मुंह मोड़ जाते हो

गोपी

सुख के सब साथी दुख में न कोई
मेरे राम तेरा नाम इक सांचा दुजा न कोई
जीवन आनी जानी छाया झूठी माया झूठी काया
फिर काहे को सारी उमरिया पाप की गठरी ढोई
ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा ये जग जोगी वाला फेरा
राजा हो या रंक सभी का अंत एक सा होई
बाहर की तू माटी फांके मन के भीतर क्यों न झांके

ध्वनि पहाड़ी - ताल तीन - वक दिन - लय धीमी - सम की जगह "क्यों कर) तर्ज " शगल गर ढूंढ़ते हो दिल के बहलाने के लिये"

गजल

~~शर्म~~ शर्म थी आँख में परदे से निकलते क्यों कर।
न सही शर्म नज़ाकत से वह चलते क्यों कर॥
न नज़ाकत सही वह मेंहदी लगाये होंगे।
फिर वह तलवे से दिलेज़ार को मलते क्यों कर॥
न सही मेंहदी किसी ग़ैर से वादा होगा।
सादिकुल क़ौल थे वादे को बदलते क्यों कर॥
न सही वादा बड़े शाने पर लटके होंगी
बोझ लेकर के वह चलते तो सँभलते क्यों कर॥

पहला सप्तक द्वितीय सप्तक

०	०	०	०	पा	धा	नी	सा	रे	गा	०	०	०	०

स्थायी	शर्म थी आँख में पर दे से निक ली गा×3 रे×2 सा×3 नी + धा पा ×2+धा ते क यों कर दूसरे मिसरे नी+ .. सा नी धा . + | गाप नवीक... तर्ज पर बजाओ।
अन्तरा	न सही. मेंह दी किसी ई ग़ैर से वा दा हो गा आ आ .पा×3 + धा+ सा×3 रे. रे सा×3 रे गा. रे. सा नी+ धा×

पहिले ... तर्ज पर ... ॥

मस्तीमें हमारी भी जो परवा नहीं करते।
हम उनकी खुशीके लिये क्या क्या नहीं करते॥
हक़ उनको ये हासिल है हुकूमत करें हम पर।
हम उनकी गुलामीका भी दावा नहीं करते॥
हम उनको मानते हैं जो हर बातमें हमसे
लड़कर भी यह कहते हैं कि बेजा नहीं करते॥
दुनियाके जो पर्दे में भी, बेपर्दा हैं उनसे —
हम पर्दानशीं होके भी पर्दा नहीं करते॥
हरगोविन्द को भला छिपाते हैं जो हमको।
हम उनकी नज़र-कैदसे निकला नहीं करते॥

ध्वनि पहाड़ी - ताल कौवाली - लय दर्मियानी - वक्त दिनका
तर्ज- चली आती हैं नज़रें घूमसे दवार कातिल में॥

गजल

बुतानेमा हवश उजड़ी हुई मञ्ज़िलमें रहते हैं।
कि जिसकी गम खाते हैं उसीके दिलमें रहते हैं।
मुहब्बतमें मजा है छेड़ का लेकिन मजे ही से -
हजारों लुत्फ हर इक शिकवये बातिलमें रहते हैं।
हजारों हसरतें वह हैं कि रोके से नहीं रुकतीं

वहुत अरमान ऐसे हैं कि दिलके दिलमें रहते हैं
खुदा रक्खे मुहब्बतको किये आबाद दोनो घर
मैं उनके दिलमें रहता हूं वह मेरे दिलमें रहते हैं।
कोई नामोनिशां पूछे तो ऐ क़ासिद बतादेना
तखल्लुस दाग़ है वह आशिक़ों के दिलमें रहते हैं.

दर्मियानी सप्तक

द्वितीय सप्तक

सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा	रे	गा	०	०	०	०

बुतानेमा ह व रा ग ज डी हुई... ई मन
सां x ४. .नी .सां,.रे सा^ नी धा. पा. मा गा सा

स्थायी
• दिल में र हते... ऽ हैं
रे सा रे गा २ रे सा..

अन्तरा
मुहब्ब त में म जा है... ऽ के ऽ़का लो
पा x ३ धा सां नी धा x २ नी सां पा x २ धा
किन म जे स की. हो ओ ओ ओ ओ
सां x २. रे^ सा^ गा रे^ सा^ ..नी धा पा धा

गज़ल

मिला है मुझको किस्मत से ख्याले हिन्द मस्ताना।
पिया करता हूँ इश्क़ श्याम की उल्फत का पैमाना ॥
मजा है बेखुदी का यह कि मैं दुनियाँ में हूँ लेकिन।
न जाना मैंने दुनियाँ को न दुनियाँ ने मुझे जाना ॥
मुझे है सिर्फ अपने यार के दीदार से मतलब।
यह मस्जिद यह मन्दिर है यह काबा या बुतखाना ॥
हमेशा वस्ल रिश्ता चाहता हूँ प्यारे मोहन से।
मैं उनको दिलरुबा कहूँ वो कहें मुझको दीवाना।
कहीं है बिन्दु इसमें मोम दिल मोती के दाने हैं
किसी की आग में पड़ के पिघल जाता है दाना ॥

गज़ल

जो करुणा कर तुम्हारा ब्रज में फिर अवतार हो जाये, तो भक्तों का चमन उजड़ा हुआ गुलजार हो जाये॥
अन्तरा - गरीबों को उठालो साँवले गर अपने हाथों से। तो इसमें शक नहीं दीनों का बेड़ा पार हो जाये॥
लुटा कर दिल जो बैठे हैं वो रो रो कर ये कहते हैं
किसी सूरत से सुन्दर श्याम का दीदार हो जाये।
बजादो रसभरी अनुराग की वह बाँसुरी अपनी
कि जिसकी तान की हर तन में पैदा तार हो जाये॥
पड़ी भवसिन्धु में दीनों के हैं दृग 'बिन्दु' की नइया।
कन्हैया तुम सहारा दो तो बेड़ा पार हो जाये॥

राग भैरवी ताल तीन

भज मन राम चरण सुखदाई ॥ ध्रु० ॥
जिहि चरननसे निकसी सुरसरी शंकर जटा समाई।
जटा शंकरी नाम परयो है, त्रिभुवन तारन आई ॥
जिन चरनन की चरनपादुका भरत रह्यो लव लाई ॥
सोई चरन केवट धोई लीने तब हरिनाव चढ़ाई ॥
सोई चरन संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥
सोई चरन गौतम ऋषि नारी परसि परम पद पाई
दण्डकवन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई।
सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा संग धाई ॥
कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल, तिन जय-छत्र फिराई
रिपु को अनुज बिभीषण निशिचर परसत लंका पाई
सिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई
तुलसी दास मारुत सुत की प्रभु; निज मुख करत बड़ाई।

भैरवी

कान्ह नित नये उरहना लावे ।

दूधदही खाकाहु की कमी नहीं, नाहक धूम मचावे

तनक दही के कारन मोहन, माखनचोर कहावे ।

सूरश्यामको मथु मही मैय्या बांधन सिखावे ॥

भैरवी

लाग गई तब लाज कहा री ।

जे दृग लागे नन्द नन्दन सों, और सों कि काजकहा री ।

भर भर पिये प्रेम रस प्याले ओछे अमल को स्वाद कहा री ॥

ब्रजनिधि रंग रचायो या जग आगे राज कहा री ॥

भैरवी

छवि आछी बनी बनवारी की ।

मोर मुकुट [redacted] मकराकृत कुण्डल, अलका धुंघरारी की ॥

मृदु मुसकान आन नयनन की जो बाणे गिरिधारी की ।

कृष्णदास युगल जोरी प तन मन धन सब वारी की

भैरवी

माटी खुदी करेंदी यार

माटी जोड़ा माटी घोड़ा माटी दा असवार ॥

माटी माटी नुं मारन लागी, माटी दे हथियार ॥

जिस माटी पर बहुती माटी तिस माटी हंकार ॥

माटी बाग बगीचा माटी माटी दी गुलजार ।।
माटी माटी नु देखन आई माटी दी बहार ।।
हस खेल फिर माटी होई पौंदी पाँव पसार ।।
बुल्लाशाह बुझारत बुझी लाह सिरों भौं मार ।।

भैरवी

अब मैं कैसी करौं री बीर ।
हौं तो धनो चाहूँ न [illegible] कहूँ मुख, मन तो पातन धीर ।।
जो घायल उन नयन बान के सो जानत यह पीर ।।
नारायण कागयो बावरी सुन्दर श्याम शरीर ।।

भैरवी

जानकी जीवन की बलि जैहौं ।
चित कहै राम सीय पद परिहरि अबन कहूँ चलि जैहौं ।।
उपजी उर प्रतीति सपने हुँ सुख, हरि पद बिमुख न पैहौं ।।
मन समेत या तन के बासिन्ह यही सिखावन दैहौं ।।
श्रवननि और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं ।।
रोकिहौं नयन बिलोकत औरहिं शीश ईश पद नैहौं ।।
नातें नेह राम सौं करि सब नातो नेह [illegible] निबैहौं
यह छर भार दास तुलसी जग जाको दास कहैहौं ।।

मीरा

हरी से लाग रह्यो रे भाई। तेरी बिगड़ी बात बनि जाई॥
रंका तार्यो बाँका तार्यो, तार्यो सधन कसाई॥
सुआ पढ़ावत गणिका तारी तारी है मीरा बाई॥
दौलत दुनियाँ माल खजाना बधिया बैल चलाई॥
जबही काल कर डंका बाजै, खोज खबर नहीं पाई॥
ऐसी भक्ति को घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई॥
सेवा बन्दगी औ अधीनता सहज मिलै रघुराई॥
कहत कबीरा सुनो भई साधो सद्गुरु बात बताई॥
यह दुनियाँ दिन चार दिहाड़े, रहो राम लव लाई॥

आली री मेरे नयनन बान पड़ी॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरति, उर बिच आन अड़ी॥
कब की ठाढ़ी पन्थ निहारूँ अपने भवन खड़ी॥
कैसे प्राण पिया बिन राखूँ, जीवन मूल जड़ी॥
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोक कहैं बिगड़ी॥

पति राखो मोरी श्याम बिहारी।

बनवारी गिरिधारी श्री कृष्ण मुरारी॥

शूरसमूह भूषण सब बैठे, भीष्म द्रोण कर्ण व्रतधारी।

कहि न सकै कोउ बात परस्पर, इनपति तन मेरी अपत विचारी।

बलविहीन पाण्डव सुत बैठे भीम गदा कर सों महि डारी।

रहीन पैज प्रबल पारथ की, जब ते धर्मसुत हारी।

लाक्षागृह में जरत उबार्यो, नाथ तुम्हें छोड़ कोहि हौं पुकारी।

अकल्पनाथ नाही कछु बिगर्यो, उघरत माथ अनाथ पुकारी।

छूटत लाज दास-दासिनि की, बहुरि आप कर कहौं मुरारी।

सूर के स्वामी बेगि दयालु देव, हिरि पचते हौ देव उघारी।

उजले तन पे मान किया और मन की मैल न धोई

हे रामचन्द्र कह गये सिया से ऐसा कलियुग आयेगा।

हंस चुगेगा दाना दुनका कौआ मोती खायेगा।

भगवान कलियुग में धर्म कर्म भागेगा

धर्म भी होगा कर्म भी होगा परन्तु शर्म नहीं होगी

बात में मात पिता को बेटा आँख दिखायेगा।

राजा और प्रजा में दोनों में होगी निशदिन खींचातानी

कदमकदम पर करेंगे दोनों अपनी मनमानी

जिसके होगी लाठी भैंस वही ले जायेगा हे रामचन्द्र —— —— ...

सुनो सिया कलयुग काला धन और काले मन होंगे

चोर उचक्के नगर सेठ और प्रभु भक्त निर्धन होंगे

जो होगा लोभी और भोगी वो जोगी कहलाये गा

मन्दिर सूना सूना होगा भरी रहेगी मधुशाला

पिता के संग संग भरी सभा में नाचेगी घर की बाला

कैसा कन्यादान पिता ही कन्या का धन खायेगा

तुम्हें और क्या दूं मैं दिल के सिवा तुमको हमारी उमर लग जाय

मुरादे हो पूरी सारी हर तमन्ना

~~मोहब्बत~~ मोहब्बत के दुनिया के तुम चांद बनना

बहारों में ये हंसना हंसाना, खुशी में हमारी भी आवाज सुनना

मेरी जिन्दगी में कोई गम न आये

तुमको हमारी उमर लग जाय

मुझे जो खुशी है तुम्हें क्या बताऊं

भला दिल की धड़कन को कैसे छिपाऊं

कहीं हो न जाऊं खुशी से मैं पागल

तुम्हें देखकर और भी मुस्कराऊं

खुदा दिल की जलो की नजर से बचाय

तुमको हमारी उमर लग जाय

छोटा भाई

माँ मुझे आंचल में छुपाले गले से लगाले कि और मेरा कोई नहीं
भूल मेरी छोटी सी भूल जाओ माता। रूठे कोई अपनों से रूठ नहीं जाता
रूठ गया हूँ तो फिर से मनाले। गले से लगाले — — — — —
ना तो यहाँ अधियार ना कोई मीत है, ना तो यहां जीवन है ना तो यहां मौत
तूने लिया है मुझको किसके हवाले। गले से लगाले — — — — —

भरोसा

इस भरी दुनिया में कोई भी हमारा न हुआ
गैर तो गैर थे अपनों का सहारा न हुआ, इस भरी - - - - - - - - -
लोग रो रो के इस दुनिया में जी लेते है,
इक हम हैं कि हमसे भी तो गुजारा न हुआ, इस भरी
इक मोहब्बत के सिवा और न कुछ मांगा था
क्या वो भी जमाने को गंवारा न हुआ — इस भरी दुनिया - — - - - -
आसमां कितने सितारे हैं तेरी महफिल में
अपनी तकदीर का कोई भी सितारा न हुआ· इस भरी दुनिया - — — - - -

=

म रवानदान

तुम्ही मेरे मन्दिर तुम्ही मेरी पूजा तुम्ही देवता हो, तुम्ही देवता हो
कोई मेरे नजरों से देखे तो समझे कि तुम मेरे क्या हो कि तुम मेरे क्या हो, तुम्ही
तुम्ही मेरे माथे की बिंदियां की झिलमिल, तुम्ही मेरे हाथो के गजरे की मंजिल
मुझे देखकर तुम जरा मुस्करादो, नही तो मै समझूंगी मुझसे रवफा हो, तुम्ही
तुम्ही एक छोटी सी माटी की गुड़िया, तुम्ही प्राण मेरे तुम्ही आत्मा हो, तुम्ही ——....
बहुत रात बीती चलो मै सुला दूं पवन छेड़े सरगम लोरी सुनांदू
तुम्हें देखकर रुवयाल आरहा है कि जैसे फरिस्ता कोई सो रहा है, तुम्ही मेरे-
जिक्र होता है जब कयामत का, तेरी जलवों की बात होती,
तु जो चाहे तो दिन निकलता है, तु जो चाहे तो रात होती,
तुमको देखा है मेरी नजरों ने, तेरी तारीफ पे मगर कैसे
कि बने ये नजर जुवां कैसे, कि ये बने जुवा नजर कैसे
न जुबां को दिखाई देता है, न निगाहो से बात होती है, जिक्र होता ——.
तु निगाहों से जो पिलाये तो, अश्क भी पीने वाले पीते है,
यु तो जीने को तो तेरे बिन भी, इस जमाने में लोग जीते है,
जिन्दगी पर उसी को कहते है जिसमें आग भी नही होता है, जिक्र —. ....

॥ राग कान्हरा ॥

परमपद राधे नाम उदार ।
जाहि श्याम मुरली में टेरत, सुमिरत बारंबार ॥
यन्त्र मन्त्र औ वेदतन्त्र में, सबै तार कौ तार ॥
श्री शुक प्रगट कियो नहिं यातैं, जानि सार को सार ॥
कोटिन रूप धरे नन्दनन्दन तऊ न पायो पार ॥
व्यासदास अब प्रगट बखानत, डारि भार में भार ॥

राग कान्हरा

प्रीतिकी रीति रँगीलोई जाने ।
यद्यपि सकल लोकचूड़ामणी, दीन अपन पौ माने ॥
यमुनापुलिन निकुञ्जभवनमें, मान मानती ठाने ॥
निकटनवीन कोटि कामिनि कुल, धीरज मनहि न आने ॥
नस्वर नेह चपल मधुकर ज्यों, आन आनसे बानै ॥
जयश्री हित हरिवंश चतुर सोई, लालहि छाँड मेंड पहिचाने ॥

राग कान्हरा

देखनदे मोरी बैरन पलकें ।
निरखत स्वरूप मदन मोहन को, बीच परत बज्जर सी सलकें ॥
आगे आगे धेनू, पाछे नन्दनन्दन, गोचारन रज माण्डित अलकें ॥
कुण्डल कर्ण कोटि रवि परसे, परत कपोलनमें कछु झलकें ॥

ऐसो स्वरूप निरख मेरी सजनी, वारी कियो इस पूत कमल के ॥
नन्ददास जनकी यह गति, तरफत मीन भाव बिन जलके ॥

राग कान्हरा

पौढ़े श्याम जननि गुणगावत ।
आजु गयो मेरे गाय चरावन, यह कहि मन हुलसावत ॥
कौन पुण्य तपते मैं पायो, ऐसो सुन्दर बाल ॥
हर्ष हर्ष कै देत सवन को, सूर सुमन की माल ॥

राग कान्हरा

कैसे रास रसहि मैं गाऊँ ।
श्री राधिका श्याम की प्यारी, तुम्हरी कृपा बास ब्रज पाऊँ ।
आन देव सपने नहि जानूँ दम्पति को शिर नाऊँ ॥
भजन प्रताप चरण महि माते, गुरु की कृपा दिखाऊँ ॥
वृन्दावन वीथिन यमुना तट, आनन्द कुटी छवाऊँ ॥
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को, वेद-विमल-यश गाऊँ ॥

राग कान्हरा

श्याम भुजा की सुन्दरताई ॥
चन्दन खौरि अनूपम राजत, सो छवि कही न जाई ॥
अति विशाल जानू लौं परसत, इक उपमा मन आई ॥

मनो मुजङ्ग गगन सों उतर्यो, अधमुख रह्यो झुलाई ॥
रत्नजड़ित पहुँची कर राजत, अंगुरी सुन्दर भारी ॥
सूर मनो फणि शिर मणि सोहत फण फण की छवि न्यारी ॥

राग कान्हरा

माधव केवल प्रेम पियारा।
गुण अवगुण कछु मानत नाहीं, जान लेहु जो जानन हारा ॥
व्याधाचरण अजन्मो ध्रुव की, गजने शास्त्र कौन विचारा ॥
भक्त विदुर दासीसुत कहिये, उग्रसेन कछु बल नहिं धारा ॥
सुन्दर रूप नहीं कुब्जा को, निर्धन मीत सुदामा कु तारा ॥
इतनौं वरणि सकौ सब दिन को, मो पै पायो जात न पारा ॥
सुनि प्रभु सुयश शरण हौं आयो, मो से दीनन को रखवारा ॥
भक्त राम परवेगि द्रवौ कौना, कहिये दीनन दास उबारा ॥

राग कान्हरा

कहाँ कहे मुदरिया डारी।
मैं बलि जाऊँ बताय किशोरी, तैं कबते न निहारी ॥
आवत हैं भुज अंसन रहे हो कैसे विहारी ॥
जो देखी तो कहिये मोते, मुदित होत कह भारी ॥
चोरी चपल लगावत मोंको, न्याव करो तुम प्यारी ॥
वृन्दावन हित रूप दास पड़ी, लाल फेंट जब झारी ॥

राग कान्हरा

ऐसी कब करिहो गोपाल ।
मनसानाथ मनोरथ दाता, हो प्रभु दीन दयाल ॥
चित चरनन निरन्तर अनुरत, रसना चरित रसाल ॥
लोचन सजल प्रेम पुलकित तनु, कर कञ्जन दल माल ॥
ऐसी रहत लिखत छिन छिन यम, अपनो भायो भाल ॥
सूर सुयश रागी न डरत मन, सुन यातना कराल ॥

॥ राग कान्हरा ॥

पूतना विष दे अमृत पायो ।
जो कछु देवत सो फल पावत, नाहक वेदन गायो ॥
शत यज्ञ राजा बलि कीन्हो, बांध पताल पठायो ॥
लख गऊ राजा नृग दीनी, गिरगट रूप करायो ॥
रंक जनमके मिल सुदामा, कुञ्चन धाम बनायो ॥
सूरदास तेरी अद्भुत लीला, वेद नेत कह गायो ॥

रागकान्हरा

आज नीकी बनी श्री राधिका नागरि ।
ब्रज युवति यूथमें रूप औ चतुरई शील शृङ्गार गुण सबन में आगरी ॥
कमल दक्षिण भुजा वाम भुज अंश सखि गावती सरस मिल मधुर सुर रागरी ॥
सकल विद्या विदित रहस हरिवंश हित मिलत नव कुञ्ज में

श्यामबड़ भागी ।।

राग कान्हरा

ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियां ।
किलकत उठि चलत धाय परत भूमि लटपटाय, धाय मोद गोद लेत दशरथ की रानियाँ । अञ्चल रज अङ्ग झार विविध भाँति सो दुलार तन मन धन वारि देत कहत मृदु वचनियां ।। मोदक मेवा रसाल, मन भावत लेउ लाल, और लेउ रुचिर पान कञ्चन सम भुनियां । आनन्द सज कम्बु कण्ठ ग्रीवा छवि रुचिर रेख बाच कुटिल कमल वदन मन्द सों हँसनियाँ । विद्रुम सो अधर ललित बोलत प्रिय मधुर वचन नाशा अति सुभग बीच लटकत लटकनियाँ । अद्भुत छवि अति अपार को कवि नहि वाकें पार कहन सके शेष महि सरस्वती रसनियाँ । तुलसी दास छवि ह्वै परत को दिये कहा रघुवर की छवि समान रघुवर छवि बानियाँ ।

राग कान्हरा

ठुमुकु, ठुमुक चलत चाल जनक नन्दनी ।
मधुर वचन तोतरे त्रय ताप मोचनी ।।
सोहत नव नील वसन मन्द हास रुचिर दशन,
झलकत अमोल सकल देव वन्दनी ।।

नुपुर पग बजत मानो साम वेद कृत गान मधुर घंट रुचि
नाद उर अनन्दनी ॥ जगत मात सखिन सङ्ग विहरत बहु भांत
रङ्ग अग्रदास निरखत छवि भव निकन्दनी ॥

राग कान्हरा

देखो री छवि राम बदन की ।
कोटि कोटि दामिनि दर्पण द्युति, निंदत कान्ति कपोल देन की।
नासा मृदु मुसुकान माधुरी, मन्द करी अति घुमड़ मदन की ॥
फब रह्यो कीट मुकुट अलकन पर, मनो फाँस दृग मीन फसन की॥
चोरत चित भृकुटी दृग शोभा, कुण्डल झलकत रवि चन्दन की॥
राम सखि छवि कहि न जात अब, सुधि न रहत लाल बदन बनन की॥

राग कान्हरा

आज बंशीवट बरसत रङ्ग ।
यमुनातीर समीर सुहावन, बोलत विविध विहङ्ग ॥
कीरति कुमरि लाल नन्द जी के, झूल रहे इक रङ्ग ॥
रूप सिन्धु के अङ्ग अङ्ग ते छवि की उठत तरङ्ग ॥
बजत बीन ताऊस सरंगी, बंशी झांझ मृदङ्ग ॥
नारायण गावत मिल सजनी, हियमें बढ़त उमंग ॥

Page 419. Big book.

ध्वनि देश - ताल क़ौवाली - लय दर्मियानी वक़्त १० बजे रात तर्ज़ - " मुनव्वर शाहज़ादा का शिफ़ा पाना मुबारक है" ॥

स्था. यह जल्सा तुमको सालाना मुबारक हो मुबारक हो
मिले हैं ऐश बेगाना मुबारक हो मुबारक हो
अन्त. सुशोभित आपने जो आज मन्दिर को किया साहब
करम हम पर यह फ़र्माना मुबारक हो मुबारक हो ॥

पहला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सां	रें	गा		०	०	००

यह जल्सा तुम को सा ला ना मु बा रक
धा × ४ पा धा नी सां नी धा पा
हो मु ब आ र क हो
म पा धा पा मा गा रे .....

सुशोभित आ प ने ज ओ आ जमन दि को
सां × ४. नी धा×२ नी सां प×२ धा सां
कि य आ स आ हब
रें .. गा रें सां नी धा

गत पृष्ठ के गजल के तर्ज़ पर नीचे लिखे दो बिन्दु जी के पद्य :— Page 36

हमारी बार तुम निकले जो मनमोहन सनम झूठे ।
तो सरदारी के वृन्दा नाम सब कहेंगे हम झूठे ॥
जो कदमों ने तुम्हारे तट शिला, केवट उधारे थे
तो अब कलिकाल में कहते हो क्यों साबित कदम झूठे
पतित से पतित पावन का, मिला क्या खूब जोड़ा है
न तुम सच्चों में कम सच्चे न हम झूठों में कम झूठे ॥
पढ़ा है हमने ग्रन्थों में कि तुम अधमों के प्रेमी हो
बता दो ग्रन्थ झूठे हैं, कि तुम झूठे कि हम झूठे ॥
जो करुणा सिन्धु करदो बिन्दु पै करुणा नजर कुछ भी
कि झगड़ा ही मिट जाय न तुम झूठे न हम झूठे ॥

=

दिखा देते हो जब रुख जब साँवले साकार थोड़ा सा
तो भर लेती हैं आँखें शर्बते दीदार थोड़ा सा ॥
ये खिल जाते हैं जब आँसू के कतरे पुष्प बन बन कर
खिला देते हैं दिल में प्रेम का गुलजार थोड़ा सा ।
जरा मस्ती के झोंकों में हिलीं आँखें तो हिलते ही
छलक पड़ता है प्यालों से तुम्हारा प्यार थोड़ा सा ॥

चले बिकने पे अश्कों के गुहर मुझसे ये कहकह कर।
कि अब देखेंगे अश्कागार का बाज़ार थोड़ा सा॥
गिरे हम बिन्दु पृथ्वी पर तो बनकर हर्फ़ ये बोले।
पतित पावन से लिखवाते हैं हम इकरार थोड़ा सा

मैं आप अपनी तलाश में हूँ मेरा कोई रहनुमा नहीं
वो क्या दिखायेंगे राह मुझको जिन्हें खुद अपना पता नहीं।
सकेंगे सजदे नहीं हैं मुझको तू मेरे सिजदे की लाज रखना
ये सर तेरे आस्ताँ से पहले किसी के आगे झुका नहीं-
मैं बहुत दिनों से सुन रहा था सजा वो देते हैं जब खता हो
मुझे तो ऐसी सजा मिली है, कि मेरी कोई खता नहीं है,
ये उनके मन्दिर ये उनके मस्जिद ये अगर परस्ता को सिजदागाहें
अगर ये उनके खुदा का घर है तो ~~क्या ये~~ ~~खुदा~~ का घर
अगर ये उनके खुदा का
तो क्या इन्सां खुदा नहीं है

- आराधना -

कोरा कागज था ये मन मेरा लिख लिया है नाम इसपे तेरा
सूना आंगन था जीवन मेरा बस गया है प्यार इसमें तेरा
टूट न जाये सपने मैं डरता हूँ नित सपने में तुम्हें देखा करता हूँ
नैना कजरारे मतवाले पइकोरे
खाली दर्पण था ये मन मेरा बस गया है रूप इसमें तेरा,
कोरा - - - - - - - - - - - -
चैन गंवाया मैंने निंदियां गंवाई, सारी सारी रात जागूं तेरी दुहाई
कहूं क्या मैं आगे नेहा लागे नैना लागे, कोई दुश्मन था ये मन मेरा
बन गया है मीत जाके तेरा, कोरा - - - - - - - - - - - - -
बागों में फूलों के खिलने से पहले, तेरे मेरे नैना से मिलने से पहले
कहाँ थी बातें मुस्काते ऐसी बातें
टूटा सा तारा सा ये मन मेरा, बन गया है चांद होके तेरा,

गीत

मेरी आस यही है हे भगवान तुम्हें अपनी कहानी सुनाया करूं

लगन नहिं छूटे हरी बीर।
ताते देहु नाम चाहे कोटि करो तदवीर।
छिनमें करत चतुर को बौरा, नृपको करत फकीर॥
नारायण अब कठिन है बचिबो बिंधे हिये हगतीर॥

सां नि ध प मप गम प परे गरे सा

राग इमन

जयजय रसिक रवनी-रवन
रूप गुण, लावण्य, प्रभुता, प्रेम पूरन भवन॥
विपति जग को मानवे को, तुम बिना कहु कवन॥
हरहु मनकी मलिनता, व्यापे न माया - पवन॥
विषयरस इन्द्री-अजीरन, अति करावहु वमन॥
खोलिये हिय के नयन, दरशौ मुखवदवन अवन॥
चतुर चिन्तामणि दयानिधि, दुसह दारिद दवन॥
मेटिये भगवत व्यथा हँसि, भेटिये ताजी भवन॥

मीरा अग्रवाल प्रतिमा अग्रवाल

६ अ मीरा अग्रवाल ८ अ

जावतम दुरिमयो सबजीको ।
नख्यो दर्प वारिधि लौं सजनी, बदन इन्दु लखि पीको
सचुपायो अतिनैन-चकोरनि बन मुलोम गन हीको ॥
वृन्दावन प्रभु उहडहो कीनो, बदन कुमुद सम नीको ॥

राग इमन

प्यारी जू मोतनहुँ टुक हेरो ।
श्री वन द्रुमन लतनके नीचे, रसमय चहूँ गान गुण तेरो ।
आन न जानों अन्य न मानों बृही कृपापद साधनमेरो ॥
ललित माधुरी आश पुरावो अवजिन करो हहाअवसेरो ॥

तुम्हीं मेरे मन्दिर तुम्हीं मेरी पूजा
तुम्हीं देवता हो, तुम्हीं देवता हो

गीत ६

मेरे गीत में दर्द हो जाता है पर
उसे आज तुमको सुना कर रहूँगा मैं
मेरे प्रासादों प्रासादों को कसक है
उसे आज तुमको दिखाकर रहूँगा मैं
स्वजन और मातापिता सब तुम्ही हो
तुम्हीने दिया है जनम इस जगत में
अतः अब तुम्हारे ही सन्मुख तुम्हारी
सभी बात तुमको बताकर रहूँगा मैं
कहाँ मैंने कब क्या किया मुझको नहीं
कहा मैंने कब, क्या यहाँ भेजा तुमने
सृष्टि सृजन कर तुम्ही जब हो बैठे
तो ये पहेली बुझाकर रहूँगा मैं ---
जहाँ तुमने भेजा वहीं पर गया मैं
जहाँ जो कराया सो करता गया मैं,
तो फिर क्यों देते हो मौलिक कभी मुझको
यह न्याय तुमसे कराकर रहूँगा मैं,
सभी योनियां सब बनाई है तुमने
और आज्ञा के बन्धन में बांधा है तुमने
नहीं एक तिनका हिलता बिना हुकुम तेरे,
तो दोषी तुम्हीको बताकर रहूँगा मैं

केदार

यह राग कल्याण ठाट का है। इस राग के आरोह में रिषभ व गान्धार वर्जित होते हैं। अवरोह में गान्धार वर्जित है/ जो वक्र रूप से मध्यम के साथ आते हैं। इस वास्ते इसकी जाति औडव षाडव होती है। इस राग में दोनों मध्यम उपयोग में आते हैं कभी कभी कोमल निषाद स्वर का भी उपयोग किया जाता है। इस राग का वादी स्वर मध्यम है व संवादी स्वर षड्ज है। यह राग रात्रि के पहले प्रहर में गाया जाता है

राग का आरोह तथा अवरोह स्वरूप

सा म, म प, धप नि ध, सां

सां नि ध प, म, ग म रे सा

राग वाचक मुख्य स्वर

सा म, म प, ध प म, पम, रे सा

गान – राग केदार

(ताल दादरा)

दीन बन्धु दीनानाथ नन्द के बिहारी तुम ॥१॥
राम होय रावण मारयो, कृष्ण होय कंस पछारयो
द्रौपदी की लाज राखी, कृष्ण हो मुरारी तुम ॥२॥

ये शुभ और अशुभ सबकर तुमको अर्पिया।

तुम्हारा हो तुम्हीं को क्या अब समर्पिया।

जैसा कोई सम्बन्ध तुम्हारा न चाहिये

तुम्हारा हो प्यारे बनकर रहूँगा। मेरे --

नहीं हमसे होगी कोई साधना अब

शरण में कमल को पड़ी रहने दो अब

कन्हैया तुम्हारे हो कर कन्हैया।

परवश हुवा कर अब मैं रहूँगा।

मैं - - - - - - - - - - - - - - - रहूँगा।

रुपाई

+	—	+	—	0	—
१	२	३	४	५	६
म	म	म	प	ध	प
दि	ऽ	न	बं	ऽ	दु
ग	म	रे	सा	रे	सा
दि	ऽ	ना	ना	ऽ	ध
म	मं	म	स	म	ग
नं	ऽ	दक	कै	ऽ	वि
प	प	ध	सां	ध	प
हा	ऽ	री	ऽ	तु	म ॥१॥

अन्तरा

+	—	+	—	0	—
१	२	३	४	५	६
प	प	प	नी	नी	ध
रा	ऽ	म	हीं	ऽ	य
नी	सां	रें	सां	सां	सां
रा	व	ण	मा	ऽ	-यो
नी	नी	ध	नी	सां	रें
कु	ऽ	भ	हो	ऽ	य
सां	नी	ध	प	प	प
कं	स	प	छा	ऽ	ड्यो
म	म	म	प	ध	प
दै	ऽ	प	दा	ऽ	को
ग	म	रे	सा	सा	सा
ला	ऽ	ज	रा	ऽ	खी
म	म	म	म	म	ग
कु	ऽ	भ	हो	ऽ	मु
प	प	ध	सां	ध	प
रा	ऽ	री	ऽ	तु	म ॥२॥

तान

3 सा सा मम, पप धप, मम पप, ममरेसा

3 सा सा मम पप धप सां सां धप, ममरे सा,

3 सांनी धप, मप धनी, सांनी धप, ममरेसा

~~५ ममरे पपम धधप~~

५ ममरे, पपम, धधप, सांसांध, रेंरें सां, धधपप, मपधप ममरेसा

१ सा मगप, मधपनी, धसांरेंरें सांनीधप मपधप ममरेसा

ह... ... ...

श्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास

सूर ऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास ॥

राग केदारा

ऐसे जन्म समूह सिराने।

प्राणनाथ रघुनाथ से प्रभु तब सेवत चरण विराने ॥

जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने ॥

सूखत बदन प्रशंसत तिनको हरि से अधिक करि माने ॥

डो	ऽ	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ग	म	रे	सा	सा	सा
ला	ऽ	ज	रा	ऽ	खो
म	म	म	म	म	ग
कृ	ऽ	ला	हो	ऽ	मु
प	प	ध	सां	ध	प
रा	ऽ	री	ऽ	दु	म ॥२॥

केदारा राग

प्रिय नवला लाड़िली राधिके ॥

इसी राग का दूसरा भजन

नाहिन रह्यो मन में ठौर
नन्दनन्दन अछत कैसे आनिये उर औ ॥
चलत चितवत दिवस जागत स्वप्न सोवत रात
हृदय ते वह श्याम मूरत छिन न इत उत जात
श्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास
सूर ऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास ॥

राग केदारा

ऐसे जन्म समूह सिराने।
प्राणनाथ रघुनाथ से प्रभु तज सेवत चरण विराने ॥
जे जड़ जीव कुटिल कापालिक केवल कलिमल साने ॥
सूखत वदन प्रशंसत तिनको हरि से अधिक कर माने ॥

राग केदार

बिलसत प्यारी लाल कुन्ज रजनी
वदन सो वदन जोरे मदन लड़ावत नुपुर के धुनि किंकिनि वलय बजनी,
पुलकि पुलकि तन आनन्द मगन मन मधुर वचन श्रवण सुनि सजनी ॥
श्री विट्ठल विपुल रस रसिक विहारी बस नव-निकुंज ललित सुरति जग-जगनी ॥

राग केदार

सब सुख अवधि श्यामा-श्याम ।
निज धाम निवास अद्भुत अहनिशा अभिराम ।
महलनी निज टहलनि में तत्पर सदा सब याम ।
श्री हरी प्रिया अंग संग सेवा पुजवहि मन काम ॥

राग असावरी

कौन जतन विनती कीजै।

निज आचरण विचार हार हिय मान जान डरिये

जिहि साधन हरि द्रवौं जान जन सो हठ परिहरिये।।

मेरी आशा यही है हे भगवन तुम्हें अपनी कहानी सुनाया करूं

मेरी इसमें खुशी तुम रूठा करो मैं अकेले में तुमको मनाया करूं

कोई आशिक कहे कोई दिवाना कहे, चाहे पागल सारा जमाना

मेरे रोने पे तुमको जो आये हंसी, तो मैं रो रो के तुमको मनाया करूं, मेरी आशा----

क्या चीज है जो सेवा में तेरी; चढ़ जाय श्याम तुम पर मेरी

मैं फूल बना कर दिल अपना, चरणों में तेरे चढ़ाया करूं, मेरी आशा ------

मैं कैसे भुला दूं तेरे नाम को, निज पलकों से झाड़ू तेरी राह को,

तेरे चरणों की धूल को चन्दन समझ, रोज माथे पे अपने लगाया करूं, मेरी आशा.......

राग खमाच

माधव! मो समान जगमाहीं ॥

राग खमाच

ऐसे राम दीन हितकारी ॥

राग खमाज

प्रीतम! तू मोहि प्रानते प्यारो।
जो तोहि देखि हियो सुख पावत, सो बड़ भागिन वारो।
जो तोको पल भर न निहारू दीखत जग अँधियारो।
मोर वृंदावन के कानन भामिनि रूपहि चारो।
नारायण हम दोउ एक हैं फूल सुगन्ध न न्यारो॥

राग खमाच

ए दोउ नृत्यत छबि पावें।
करे करनमें चिबुक चानमें नइ-नइ गति उपजावें।।
हँसनि लसनि दशननि की दमकनि चितवन चित्त चुरावें।।
भृकुटि विलास चपल आयत अति अँखियन मार मचावें।।
रीझि रीझि रसभींजि परस्पर प्रेम उमग उमगावें।।
श्री हरिप्रिया निशंक अंक भरि लै लै लंक लगावें।।

राग खमाच

रास में नृत्यत री रसभीने।
प्यारी प्यारो रूप उज्यारे दोउ गलबहियाँ दीने।
थेई-थेई रट सुघर उचरहिं सुरसंपरप्रवीने।
उरप तिरप में तृवट सुलप पर अलग लाग दर लीने।
धुंकर धुं धुंकर अपर अपर झर झां झां झरकत झीने।
श्री हरिप्रिया भा री बोली झीं न न न ननन नन झीने।।

राग केदार

कबहुक अम्बा अवसर पाई ।
मेरियो सुधि द्यायिबी, कछु करुण कथा चलाइ ॥
दीन सब अङ्ग हीन क्षीण मलीन अघी अघाइ ॥
नाम लै भरो उदर इक प्रभु दासी दास कहाइ ॥
बूझिहैं सो है कौन कहबो, नाम दशा जनाइ ॥
सुनत राम कृपालु के मेरी बिगड़िओ बनि जाइ ॥
जानकी जग-जननी जनकी, किये वचन सहाय ॥
तरै तुलसीदास भवतव नाथ गुण गण गाय ॥

राग केदार

रघुपति निरखि गिद्ध शिर नायो।
कहि कै बात सकल सीता की, तनु तजि चरन कमल चित लायो॥
श्री रघुनाथ जानि जन अपनो, अपने कर करी ताहि जरायो॥
सूरदास प्रभु दरश परस करि, हरि कै लोक सिधायो॥

राग केदार

देखिरी नवल नन्दकिशोर।
लकुर सौं लपटाइ ठाढ़े, युवति जनमन चोर॥
चारु लोचन हँसि बिलोकनि, देखि कै चित भोर॥
मोहनी मोहन लगावत, लटकि मुकुट झकोर॥
श्रवण-ध्वनि सुरनाद मोहत, करत हिरदै कोर॥
सूर अङ्ग त्रिभङ्ग सुन्दर छवि निरखि तृण तोर॥

राग केदार

यद्यपि राधिका हरि संग।
हावभाव कटाक्ष लोचन करत नाना रङ्ग॥
हृदय व्याकुल धीर नाहीं, वदन कमल विलास॥
तृषा में जल नाम सुनि ज्यों, अधिक अधिक हि प्यास॥
श्यामरूप अपार इत उत, लोभ पुट निस्तार॥
सूर मिलत नहिं लहत कोऊ, दुहुनि बल अधिकार॥

राग केदार

राधेहि मिलेहु प्रतीत न आवति।
यद्यपि नाथ विधु बदन बिलोकति, दरशन को सुख पावति
भरि भरि लोचन रूप परम निधि, उर में आनि दुरावति
विरह-विकल मति दृष्टि दुहुँ दिशि, सचि सरधा ज्यों धावति।
चितवत चकित रहत चित अन्तर, नैन निमेष न लावति॥
सपनो आहिकी सत्य ईश इहि बुद्धि वितर्क बनावति॥
कबहुँक करत विचार कौन हो को हरि केहि यह भावति॥
सूर प्रेमकी बात अटपटी ~~मन~~ मन तरङ्ग उपजावति॥

राग केदार

~~जबतें~~ बिछुरे कुञ्ज ~~श्याम~~ बिहारी।
नीन्द न परे घटे नहि रजनी, व्यथा विरह ज्वर भारी॥
हौं उठि सखी आँगन व्है आई जगमग रही उजियारी॥
श्रवणन शब्द सुधाइ सखी री पग चातक द्रुम डारी॥
उरते सखी दूरि करु हारहि, कंकन धरहु उतारी॥
सूरदास प्रभु बिनु अति व्याकुल, करि बहु जतन जुहारी॥

राग केदारो

सखी री हरि आवें केहि हेत।
वे राजा तुम ग्वाल बुलावत रहे परेखो लेत।
अबहिर धाम अनेक राजत हैं, मोर पंख नहि मानत॥

सुनि ब्रजराज प्रीति दै बैठत, यदुकुल बिरद बुलावत।
द्वारपाल आनि पौर विराजत दासी सहस अपार।
गोकुल माइ दुहत दुख गोयो सूर भये एवार॥

राग केदार

नेकु री लोचननकौं लाहु।
कुँवर सुन्दर साँवरो लखि, सुमुखि सुन्दर चाहु।
खण्डि हरको दण्ड हाँदे जानु लम्बित बाहु ।
रुचिर उर जयमाल राजत देत सुख सब काहु॥
चितै चित हित सहित नख शिख, अंग अंग निबाहु॥
सुकृत निज सिय राम रूप विरञ्चि मतिहिं सराहु॥
मुदित मन बरवदन शोभा, उदित अधिक उछाहु॥
मनो दूर कलंक कर शशि समर सूद्यो राहु॥
नयन सुखमा अयन हाथ सरोज सुन्दरताहु।
बसत तुलसीदास उर पुर जानकी को नाहु॥

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलिशान
किसने जानी तेरी माया किसने भेद तुम्हारा पाया
हारे ऋषि मुनि कर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान

श्रीमान् इंजीनियर महोदय वाटर वर्क्स नगरपालिका,
नवाब गंज गोंडा

सेवा में विनम्र निवेदन है कि प्रार्थी को ज्ञात हुआ है कि आपकी नगरपालिका में कुछ टेक्निकल स्टाफ की आवश्यकता है।

प्रार्थी ने सिविल मैकेनिकल आई.टी.आई. लखनऊ से सन् 1964 में पास किया है, तथा अप्रेन्टिस [illegible] फिटर की 6 माह की ट्रेनिंग [illegible] वाटर वर्क्स ऐशबाग लखनऊ से प्राप्त किया है।

अतः सेवा में विनम्र निवेदन है कि प्रार्थी को उपरोक्त जगह के लिए [illegible] से उपरोक्त लाइन फिटर जॉब के पद पर नियुक्त करने की कृपा करें।

प्रार्थी :

राग काफी

बैठि तहाँ मिलि गावन लागे ॥
बीरी रबाब रबवाब परस्पर तान मान सुनि अति अनुरागे।
मूर्च्छना रचना श्रुति धारि भये थिर जंगम थावर जागे॥
'वृन्दावन' प्रभु रीझि अपनायो भूलि गये दम्पति रसपागे ॥

राग काफी

कैसे जल लाऊँ मैं पनियट जाऊँ ?
होरी खेलत नन्द लाडिलो क्यों अनिविद्न पाऊँ ?
वे तो निलज फागमदमाते हौं कुल बधू कहाऊँ ;
जो छुवे 'रसिक बिहारी' अंचल तो धातीका मदाऊँ ॥

राग काफी

जावक युत युग चरन लली के।
गदुत अमल अरुण दिवाकर मोहन-मानस-कुञ्जकली के।
मंजुल मृदुल मनोहर भाव निधि प्रभव श्रृंगार निकुञ्ज गलीके।
कल्पतरु कामधेनु चिन्तामणि, भगवत रसिक अनन्य अली के।

राग काफी

बेदरदी! तोहि दरद न आवे।
चितवन में चितवस करि मेरो, अब काहे को आँख चुरावे।
अबलों पड़ी द्वारपैहै तेरे बिन देखे जियरा घबड़ावे ॥
नारायण महबूब साँवरे, चापल औंठि गैल बतावे ॥

राग काफी

प्रीतम या साँवरे सों मैं प्रीति लगाई ।
कुल कलंक ते नाहिं डरौंगी अब तो करौं अपनी मन भाई ।
बीच बजार पुकार कहौं मैं चाहे करो कोउ कोटि बुराई ।
लाल गुपाल मिली आँखिन सों मृदु मुसकनि मेरे उर आई ।
बिन देखे मन मोहन को मुख मोहि लगत त्रिभुवन दुखदाई ।
नारायण तिनको सब फीकौ । जिन चाखी यह रूप मिठाई ।

राग भैरव

राम जप राम जप राम जप बावरे।
घोर भव नीर निधि नाम निज नावरे ॥
एकही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साधरे।
ग्रसे कलि रोग योग संयम समाधि रे ॥
भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो बाम रे।
रामनाम ही सों अन्त, सब ही को काम रे ॥
जग नभ वाटिका रही है फल फूल रे।
धुआं कैसे धौरहर देख तू न भूल रे ॥ मत भूल रे।
रामनाम छाड़ि जो भरोसो करे और रे।
तुलसी परोसो त्यागि मांगे कूर कौर रे ॥

राग भैरव

जाग जाग जीव जड़ जोहै जग यामिनी ।
देह गेह नेह जैसे जान जैसे घनदामिनी ॥
सोवत सुपने सहै संसृत संतापरे ।
बूड़्यो मृग बारि खायो जेवरी के साँपरे ॥
कहै वेद बुध तू तो बूझ मन माँहि रे ।
दोष दुख सुपने को जागे ही पै जाहि रे ॥
तुलसी जागे ते जाय ताप तिहुँ तापरे ।
राम नाम शुच रुच सहज सुभावरे ॥।

राग भैरव

सुमिर सनेह सो तू नाम रामराय को ।
सम्बल निसम्बल को सखा असहाय को ॥
भाग है अभागेहू को गुण गुणहीन को ।
गाहक गरीब को दयालु दानि दीन को ॥
कुल अकुलीन को सुन्यो है वेद साख है ।
पाँगुरे को हाथ पाँव आँधरे को आँख है ॥
माई बाप भूखे को अधार निराधार को ।
सेतु भव सागर को हेतु सुख सार को ॥
पतित पावन रामनाम सों न दूसरो ।
सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सों ऊसरो ॥

कलह सतकी कथा

पाति ९ - वर्ष १५ जिल्द

प्रश्न: श्रीकृष्ण ने बाल्य अवस्था में इन्द्र देव दिये
कैसे आनन्द थे गये

उत्तर: नारद जी, कृष्ण जी, गरुड़ जी / [illegible]
[illegible] नाम [illegible] इन था वे पात्र
व्यक्ति पाये / [illegible] के

प्रथम [illegible] : — प्रसन्न [illegible]
द्वितीय आप के [illegible] दिया जिव पान
[illegible] विकट ही [illegible] तब [illegible]
नहीं दिया। [illegible] थी। [illegible]
प्र. [illegible] तब आप [illegible]।

नारद जी — [illegible]
[illegible] हुए और [illegible] है। [illegible]
आपके [illegible] थी [illegible]
है। [illegible] नहीं / इसलिये [illegible] है। [illegible]
ने कहा।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
आम मात मरः
[illegible]

कार्यविवरणकर्ता — एवमेव

आनन्द मिलता है कि इनमें एकमात्र ही
सुगन्धित मल है। जिससे कि हम दिव्य
कार्यों के उपयोगी नहीं होता है। जिससे देवता
के निमित्त कार्य के आर्थिक आकार होता
रहेगा। इसके में इसकी विशेषता

अब आगे आर्थिक उपभोग्यता हेतु
— आर्थिक विषय का मापदण्ड
प्रभाव होगा। क्योंकि इसकी विशेषता
अब पतन होने का कारण नहीं है
विकास होता रहेगा। क्योंकि इसके देवता
होते पदार्थ इसी आवश्यक है कि इसके
द्वारा पतन होता था। आवश्यक पता
है कि इसमें पूर्ण आनन्द मिलता था एकत्रित
होने का कारण विकास ही होता। अतः एक
ही विषय का आविष्कार नहीं होता था।

इसके बाद [illegible] प्रतिमा [illegible] है जब आप
[illegible] हुए हैं [illegible]
[illegible] प्रणाम करता हूं।
[illegible] दिव्य रूप सबको प्रदान करता
है। [illegible] दिव्य रूप में
[illegible]
[illegible] सबको [illegible] दिव्य रूप [illegible]
[illegible]
इसलिए [illegible] गये हैं।
[illegible] प्रतिमा [illegible]
[illegible] चाहते हैं [illegible]
[illegible] है जो [illegible]
[illegible] में [illegible]
है। [illegible]
[illegible] है। [illegible] है २०

स्वामीजी के सन्मुख होने से हो चुका। ठीक है आप ऐसे इनका शरीर लौटा दिया जाय।

4 व्यासजी ने कहा:— 'सत्यं सत्यं'। हमने प्रश्न किया कि यह शरीर इतने दिन इनसे अलग क्यों रहा और कौन-कौन अपराधों से अलग रहा।

इसपर पुनः व्यासजी ने कहा:—
प्रधान कारण सन्मुखता। 2. द्वितीय अभिमान। 3 स्वाभिमान। 4 स्वेच्छा। और इसी से क्रोध और द्वेष की उत्पत्ति हुई।

द्वितीय कारण आपके संकल्पके कार्य का प्रारम्भ। द्वितीय 2 भविष्य में कार्य करने का कारण। 3 पापों का संशोधन। 4 स्वामीजी द्वारा आविर्भाव का।

5 ब्रह्माने कहा:— 'एवमेव' आपत्ति यही है कि इनमें ऐश्वर्य की अनुगामिता होगी कि हमारे दिव्य कार्यों के सहयोगी नहीं हो पाते हैं।

इसके बाद काली प्रसाद [illegible] है [illegible]
जिन लोगों [illegible] करते हैं [illegible]
[illegible] पुनः प्रकाश डाला है।
[illegible] सबको प्रणाम करता
हूँ। [illegible]
[illegible]
[illegible] सबको [illegible]
[illegible]
[illegible] गये हैं।
काली प्रसाद [illegible]
[illegible] चाहते हैं [illegible]
[illegible] हैं जो [illegible]
[illegible] में [illegible]
हैं। [illegible]
[illegible] है। [illegible]

हो
स्वामीजी के सन्मुख होनेसे चुका। ठीक है आपके इनका शरीर लौटा दिया जाय।

4 व्यासजीने कहा:— 'सत्यं सत्यं'। हमने प्रश्न किया कि यह शरीर इतने दिन इनसे अलग क्यों रहा और कौन-कौन अपराधोंसे अलग रहा।

इसपर पुनः व्यासजीने कहा:—
प्रधान कारण सन्मुखता। 2. द्वितीय अभिमान। 3 स्वाभिमान। 4 स्वेच्छा। और इसीसे क्रोध और द्वेषकी उत्पत्ति हुई।

संकल्पका
द्वितीय कारण आपके कार्यका प्रारम्भ। द्वितीय 2 भविष्यमें कार्य करानेका कारण। 3 पापोंका संशोधन। 4 स्वामीजीका आविर्भावका।

5 ब्रह्माने कहा:— 'एवमेव' आनपमय यही है कि इनमें ऐश्वर्यकी सुगन्धमात्र रहनेसे कि हमारे दिव्यकार्योंके सहयोगी नहीं हो पाते।

जिससे कि समय-समय पे कलेवर आर्यों में अलग होता रहेगा।

इतने में व्यासजी फिर बोले:—

अब आगे भविष्यमें ऐश्वर्य-माधुर्य आच्छा-आच्छा रहेगा। अर्थात् ऐश्वर्य माधुर्य समान-समान रहेगा। स्वामिनीजू की कृपा से अब पतन का नहीं है। ऐश्वर्य का उच्चन अब स्वामिनीजू करादेंगी। औ बहुत कुछ आ चुका है जिसके कारण पतन हुआ था।

अब इस यन्त्र के साथ जो पूर्व अनात्म प्रारब्ध जो महा बद्ध जीव की नाईं था स्वतंत्र हो चुका। इसी कारण ही ऐश्वर्य का आविर्भाव नहीं होता था।

इसके बाद आर्य ब्रह्मने कहा:— "ठीक है जब आप सब लोग ऐसा कहते हैं तो मैं प्रेमका बलवे प्रेम को पुनः प्रदान करता हूँ। औ अपना दिव्य रूप सबको प्रदान करता हूँ। जिसको जहां तक उस दिव्य रूपमें पहुँच होगी वहां तक वह कायम रहेगा।

वैसे तो सबको अपने दिव्यस्वरूप से स्वीकार कर चुका हूँ अनाथ के रि में जहाँ शबरी इत्यादि की गति है।

कायब्रह्म ने कहा श्री जी मुझे स्वस्थ देखना चाहती है। तो मैं तो अपने भक्तों के आधीन हूँ। मेरी स्वस्थता और अस्वस्थता क्या? और वैसे तो मैं सदा स्वस्थ ही हूँ। इनका (श्रीजीका) मन्त्रज कोई तात्पर्य नहीं। यन्त्र केवल मकान मात्र है। इनमें (श्री जीमें) दिव्य ज्ञान विशिष्ट है, पूर्ण ऐश्वर्य का ज्ञान है, पूर्ण परत्व का ज्ञान है। ये सब प्रेम की गति के बाहर है। और प्रेमियों के लिये इन उपरोक्त पूर्णता की जरूरत नहीं है। जहाँ ज्ञान नहीं प्रेम के कारण शरीर धारी होने पर प्रेम के स्थान पर ये ज्ञान कभी-कभी अनर्थमय हो जाते हैं — प्यार की कमी हो जाती है।

कौशल्या की स्थिति ठीक थी। क्योंकि उनमें समान ऐश्वर्य और माधुर्य था। युधिष्ठिर तथा कौशल्या तीनों आदि से ठेट थे। सुतकी प्रीति प्रतीति जिनकी ज्यों नृप के हो जाये।

आनन्दपद में [illegible]

1. प्रेम! प्राप्त साबुत गिलास ही पीने के काम आता है न कि फोड़ देने पर।

2. यह २५ तत्व के धातु से बना हुआ गिलास तुम्हें मिला था, पर, तुमने इसके हजार टुकड़े कर दिये, तो पुनः कहाँ से दे।

3. ४ वर्ष उस गिलास को ईश्वर ने फिर कृपा करके जोड़ दिया था, जिसे तुमने फिर तोड़ दिया। अब पर फिर तुम्हारी गिलास के टुकड़े टुकड़े तुम्हारे सामने हैं। इन टुकड़ों को भी सम्भाल कर रखो और मत तोड़ो शायद कभी फिर कोई जोड़कर के जोड़ दे।

4. २५ तत्व के संघात के गिलासों को पीते हैं।

कामोद चन्द्र ताल (त्रयताल) (धमार)

म

ग

मंपध	मंप	म	रे	सा	सा	रे	प	प	प	ध	प
आऽऽ	हेऽ	ती	ऽ	च	त	तूं	ऽ	मो	रे	म	न
मंपध	मंप	म	सा	रे	सा	सा	-	ध	धनि	प	प
जऽऽ	नऽ	न	म	र	ण	दे	ऽ	इ	घऽ	र	म
सा	सा	रे	रे	सा	सा	म	रे	प	-	ध	प
अ	बि	ह	ल	अ	ज	प	र	मा	ऽ	त	म
०		३		४		×		०		२	

अन्तरा

प	-	सां	-	सां	सां	सां	-	सां	रें	सां	सां
जी	ऽ	ले	ऽ	नि	त	छों	ऽ	ड	जी	र	न
सां	ध	सां	सां	सां	रें	सां	सां	ध	धनि	प	प
औं	ऽ	व	र	न	व	प	हे	र	तऽ	ज	न
प	मंपध	ध	-	प	प	म	रे	सा	सा	ध	प
त	ऽऽ	ऽ	ले	ऽ	प	ह	ध्या	ऽ	र	त	त	न
सा	सा	रे	रे	सा	सा	म	रे	प	-	ध	प
ह	र	रं	ग	नि	त	प	र	मा	ऽ	त	म
०		३		४		×		०		२	

गज़ल

किया बिस्मिल मुझे उसकी अदा के हाथ क्या आया ।
तड़पता छोड़कर तेगे कज़ा के हाथ क्या आया ॥
दिखाकर हुस्न जमाल अपना मुझे तो कर दिया शैदा ।
भला पूछे कोई उस महलका के हाथ क्या आया ॥
मेरे इस गुन्चये दिलको कभी उसने न आ खोला ।
गई वालाई वाला उस सवा के हाथ क्या आया ॥
फिरा शहरो वियां वा तालिबे दीदार नारायण ।
बिठाया उसको पर्दे में हया के हाथ क्या आया ॥

गज़ल

जहाँ ब्रज राज कुल पाये चलो सखि आज वा वनमें ।
बिना वा रूपके देखे विरह की दौ लगी तनमें ॥
न कल पड़ती है बेकल को न जी लगता है बिन जानी ।
भई फिरती हूँ योगिन सी सरे बाजार गलियनमें ॥
करू कुर्बान जी उसपर जनम भर गुलाम रहूँगी ।
मेरा महबूब जो लाकर बिठादे तेरे आँगन में ॥
नहीं कुछ गर्ज दुनियाँ से न मतलब लाजुम से मेरा ।
जो चाहो सो कहो कोई बला अब तो वही मनमें ॥
तेरी यह बात साँची है नहीं शक इसमें नारायण ।
जो सूरत आँख में समाना वह फिर कैसे बातनमें ॥

गजल

समझ बूझ दिल खोज पियारे आशक होकर सोना क्या ॥
जिन नैनों से नींद गवाई तकिया लेफ बिछौना क्या ॥
सूखा रूखा राकड़ा टुकड़ा चिकना और सलोना क्या ॥
कहत कमाल प्रेम के मारग शीश दिया फिर रोना क्या ॥

स्वामिन्या निर्दिष्टानि रागाणि
अन्तरस्तोत्कान्यत्यावश्यकयानि =

१ - आसावरी
२ - कामोद ✓
३ - केदार ✓
४ - खम्भावती
५, गुणकली
६, चन्द्रकल्याण
७ - चन्द्रिका
८ - चम्पाकली ✓
९ जैत~~कल्याण~~ श्री
१० देवरञ्जनी ✓
११ - नायकी कह्नरा
१२ - नारायणी
१३ पटमञ्जरी (बिल) ✓
१४ पटमञ्जरी (का०) ✓
१५ बागेश्री ✓
१६, बिलावल
१७ मधुवन्ती ✓
१८ मालकौस
१९ मालवी
20 मालश्री
२१ मालगुञ्जी
२२, मालारानी
२३ मालिन
२४ मालीगौरा
२५ राजेश्वरी
२६, रागेश्वरी
२७ रामकली,
२८ रामदासीमह्लार
२९ रेवती कान्हरा
30 लाजवन्ती ✓
३१ वैजयन्ती ✓
३२ श्याम केदार
३३ श्रीराग
३४ श्रीरञ्जनी
३५ सरस्वती ..
३६, सूहा (कान्हरा)
३७, सोहनी
३८, हंसकंकणी ✓
३९ हंसध्वनि ✓
४० हंसमञ्जरी ✓
४१ हंसश्री ✓

राग कामोद

कामोदो भाति युक्तः क्वचिद् रिगधनिभिस्तीव्रकैर्मद्वयेन,
वादी चात्र प्रसिद्धः प्रविलसति सदा पञ्चमो रिस्त्वमात्यः।
स्तोको ऽ मुष्मिन्निषादः प्रकटयति रुचिं वक्रगश्चावरोहे,
सानन्दं पूर्व यामे निशि विबुधजनैर्गीयते मञ्जु कण्ठैः॥
'कल्पद्रुमाङ्कुरे'

द्वैमध्यम तीरवे सर्वहि उतरे बक्र ग होइ।
परि बादी संवादि जहाँ कामोद कहे सोई॥
(चन्द्रिका सा)

यह राग कल्याण ठाठ से उत्पन्न होता है

आरोहावरोह स्वरूप

सा रे, प, मे प, धप, निध सां / सां निध, प, मेपधप, गमप गमरेसा

पकड़

रे, प, मेप धप, गमप गमरेसा

कामोद त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

रे रे प प	ध ध प प	ग म प ग	म रे सा ऽ
रे प मे प	ग म रे सा	रे रे सा नि़	ध़ ध़ प़ प़
प़ प़ सा ऽ	रे रे सा. ऽ	ग म प ग	म रे सा सा
×	2	0	3

अन्तरा

प प सां ऽ	सां रें सां ऽ	गं मं पं गं	मं रें सां ऽ
सां रें सां नि	ध ध प प	ग म प ग	म रे सा ऽ
×	2	0	3

आमोद त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

रे सा म(रे) रे	प – प प	मे प ध प	(रे)म – (नि सा/क)रे (मे)प
ह त म न	रं ऽ ग रा	ऽ ग भी को	अ ऽ इ इ
ध प (प)सां रें	सां प ध प	मेपधध मेप गमप गम	(ग)म. रे सा (सा)म
ध त प र	स त ग नि	सोऽऽ ऽऽ हेऽऽ ऽऽ	अ मि त, क।
3	×	2	0

अन्तरा

(मे प री)

ध प (प)सां सां	सां रीं सां सां	रीं सां (सां)मं रीं	सां ध प मेपध,
प मु र स	ह च र को	उ क हे सं	ध्रू र न काऽऽ
ध प (ग)म सा	रे रे सा सा	मं रीं सां मेपध,	ध म रे सा
मो द क हे	च तु र गु	रु ज न कोऽऽ	सु म त, क।
3	×	2	0

कामोद – (त्रिताल) (मध्यलय)

स्थायी

~~ध प सां सां~~

म रे प प	– प ध प	ग म प पग	म सा रे सा
ऋ तु व सं	ऽ त स खि	मो ऽ म नऽ	भा ऽ व त
सा प ग ग	म रे सा सा	सा – रे सा	ध़ नि़ प़ प़
र स व र	सा ऽ व त	मो ऽ द ब	ढा ऽ ब त
प – सा सा	रे रे सा सा	ग म प पग	म सा रे सा
x का ऽ मु कु	2 जं न म न	0 नि त त रऽ	3 सा ऽ व त

अन्तरा

प प सां –	सां सां रें सां	सां ध सां रें	सां – ध प
न व प ऽ	ल्ल व न व	कु सु म सु	मं ऽ डि त
सा सा म मग	प प ध प	ग म प पग	म सा रे सा
ह र र ङ्ऽ	त रु व र	अ ति ह रऽ	षा ऽ व त
x	2	0	3

कामोद तिताला स्थायी

म रे प प	ध – प –	ग म प मग	म सा रे सा
त न म न	वा ऽ रूँ ऽ	गु रु च रऽ	ण न प र
सा प म ग	म रे रे सा	प प मंपध मंप	म सा रे सा
य दि पा ऽऊँ	ऊँ द र स	ब लि वऽऽ लिऽ	हौं ऽ जा ऊँ

अन्तरा

प प सां सां	सां सां रें सां	सां ध सां रें	सां सां ध प
म न कु सु	म सों क रि	गु रु प द	अ र च न
मे – प ध	– ध प प	मपंध मंप म सा	रे – सा –
मे ऽ क भा	ऽ व ध र	मंऽऽ ऽऽ ग ल	गा ऽ ऊँ ऽ

कामोद - झपत (मध्यलय)

स्थायी

(रे)म	रे	सा	रे	सा	(म)रे	प	प	प	—
ज	य	ति	न	व	ना	ऽ	ग	री	ऽ
(प)म	प	ध	ध	प	(म)प	—	प	म	—
स	क	ल	गु	ण	आ	ऽ	ग	री	ऽ
(रे)म	रे	प	प	प	(प)सां	रें	सां	(सां)ध	प
कु	ऽ	ण	गु	ण	आ	ऽ	ग	री	ऽ
(प)म	प	ध	प	—	(ग)म	(म)प	(ग)म	(मा)रे	सा
दि	न	न	मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रि
×		2			0		3		

अन्तरा

प	प	प	(प)सां	सां	सां	—	रे	सां	—
ज	प	ति	ह	रि	मा	ऽ	सि	नी	ऽ
(सां)ध	(नि)ध	सां	सां	रें	सां	—	(सां)ध	प	—
कु	ऽ	ण	ध	न	दा	ऽ	सि	नी	ऽ
सां	—	(सां)मं	(मं)रें	सां	(नि)सां	रें	सां	(सां)ध	प
म	ऽ	ल	ग	ज	गा	ऽ	सि	नी	ऽ
(रे)प	प	ध	प	—	(ग)म	मसा	रे	—	सा
न	व	कि	शो	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	रि
×		2			0		3		

कामोद धमार (विलम्बित)

म	रे	सा	सा	रे	प	–	प	प	प	–	प	–	प
ना	ल	मो	री	चू	ऽ	ऽ	न	र	मो	ऽ	जे	ऽ	जी
3				×					2		0		

अन्तरा

प	प	–	सां	सां	सां	–	सां	ध	–	सां	रें	सां	सां
अ	बी	ऽ	र	गु	ला	ऽ	ल	मो	ऽ	प	र	जि	न
ध	–	नि	प	–	गम	प	मग	म	रे	सा	–	ध	प
डा	ऽ	ऽ	रो	ऽ	जिऽ	न	हीऽ	ऽ	पे	डा	ऽ	रो	ऽ
प	ध	ध	मे	प	प	प	ग	म	प	म	रे	सा	सा
जे	धी	र	ह	त	तो	रे	सं	ऽ	ग	ला	ला	मो	री
×					2		0			3			

प्रोक्तेयं जयजयवन्तिका तु पूर्णा
गौनी द्वावपि मृदुमो रिधौ च तीव्रौ
वादी रिर्विलसति पञ्चमो हि मन्त्री
सोऽरट्यङ्गत इह गीयते निशायाम् ॥
द्वै गन्धार निषाद द्वै संवादै परि जोइ। 'अन्य दूजो हुई'
सोरट ही के अङ्ग ते जयजय वन्ती होई ॥

जयजय वन्ती (खमाज ठाठ से उत्पन्न होता है) गायन का समय रात्रि का दूसरा पहर

जयजय वन्ती – झप ताल (मध्य लय)

स्थायी

प़	प़	रे	रे	रे	रे	रे	रे	ग	सा
रे	ग	ग	म	प	ग	म	रे	ग॒	रे
नि़	नि़	सा	ऽ	सा	रे	ग॒	रे	रे	सा
नि़॒	ध़	नि़॒	सा	सा	रे	नि़॒	ध़	नि़॒	प़
				अन्तरा					
म	म	प	नि	नि	सां	ऽ	नि	सां	ऽ
नि	नि	सां	रें	ग॒ं	रें	सां	रें	सां	नि॒
ध	प	धं	म	ग	म	प	नि	सां	सां
सां	नि॒	ध	म	प	ध	म	रे	ग॒	रे
नि॒	नि़	सा	ऽ	सा	रे	ग॒	रे	रे	सा
नि़॒	ध़	नि़॒	रे	सा	रे	नि़॒	ध़	नि़॒	प़।
×		2			0		3		

चितचढ़ी सखि मोरे सांवरी सूरत ॥
और कछुक नाहि मोरे ध्यान आवत ॥
सुखविलासहु सकल मोमन तबहु पाय पियाके दाश
पाश। छिन एक पावत चित चढ़ी ॥

 (मध्यलय)

स्थायी

(नि़)ध़	नि़	(री)ग	रे	—	(ग)रे	ग॒	रे	—	रे
चि	त	च	ढ़ी	ऽ	स	खि	मो	ऽ	रे
(म)ग	—	म	प	—	(ग)म	—	रे	ग॒	रे
सां	ऽ	व	री	ऽ	मू	ऽ	ऽ	र	त
(सा)नि़	—	सा	—	सा	(ग)रे	ग॒	रे	—	सा
ओ	ऽ	र	ऽ	क	छु	क	ना	ऽ	हिं
(ध)नि॒	धप	(प)ग	म	प	(ग)म	—	रे	ग॒	रे
मो	रेऽ	ध्या	ऽ	न	आ	ऽ	ऽ	व	त
x		2			0		3		

अन्तरा

म	प	(ध)नि	ध	—	(नि)ध	नि॒	ध	नि॒	ध
सु	ख	खि	ला	ऽ	स	हु	ल	क	ल
म	—	ध	नि॒	धप	(प)ग	म	(म)रे	ग॒	रे
मो	ऽ	म	न	तऽ	ब	हु	पा	ऽ	य
(सा)नि़	नि़	सा	—	सा	(ग)रे	ग	रे	रे	सा
पि	या	के	ऽ	द	र	श	प	र	स
(सा)सां	नि	ध	म	प	(प)ग	म	रे	ग॒	रे
छि	न	ए	ऽ	क	पा	ऽ	ऽ	व	त
(रे)ध़	नि़	(रे)ग॒	रे	—					
चि	त	च	ढ़ी	ऽ					

एरी श्याम पिया अपने सङ्ग खेलौं जी होरी ॥

अबीर गुलाल ~~अमम~~ अतर अरगजा सुगन्ध
लिये भर भर झोरी ॥

जयजयवन्ती - धमार - (विलम्बित)

स्थायी

सा — ध़ नि़	रे — — रे गरे	— मप	म ग म
ए ऽ री ऽ	आऽ ऽ ज ऽऽ	ऽ पिऽ	या ऽ ऽ
रे ग॒ रे सा	नि़ — सा रे ऽग॒	रे सा	रे नि़ सा
अ प ने ऽ	सं ऽ ऽ ग ऽऽ	रवे ऽ	लों ऽ ऽ
नि़ ध़ प़ —	प़ सां नि॒ ध प	मग म	रे ग॒ रे
औ ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽ	ऽ ऽ री

अन्तरा

म म प नि —	सां नि	सां — —	नि सां सां सां
अ बी ऽ र ऽ	ऽ गु	ला ऽ ऽ	ल अ त र
नि सां सां रें —	रेंगं रेंसां	सां — रेंनि॒	ध ध प —
अ र ग आ ऽ	ऽऽ मुऽ	म ऽ ऽऽ	ध ला ने ऽ
मप सां नि॒ ध प	मग म	रे ग॒ रे	
भऽ र ऽ भऽ	रऽ ऽ	को ऽ री	

१) स्टैम्प
२) कैपसूल
१) सब्जी
४) वद जी
१) दही डिब्बा
१) साग
६) दवा
१) दूध नास्ता
१) दूध
१११) धुलाई
२१११)
३२॥
४३
॥) रिक्शा

जयजयवन्ती – धमार (विलम्बित)

स्थायी

सा – ध़ नि़	रे – – रे गरे	म प	म ग म
आ ऽ ज ध	री ऽ ऽ लो ऽऽ	मो ऽ	ह न ऽ
रे ग रे सा	नि़ नि़ सा रे –	ग –	रे सा –
ना ऽ ग र	ब्र ज ऽ में ऽ	ऽ ऽ	ख्वे ऽ ऽ
रे नि़ ध़ प़	नि ध – म –	प ध	ग – रे
ऽ ऽ ल्ले ऽ	हो ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ री
नि़ सा ध़ नि	.		
3	x	2	0

अन्तरा

म – प नि –	– नि	सां सां –	सां – सां –
ख्वा ऽ ऽ ल ऽ	ऽ ला	ऽ ल ऽ	स ऽ ब ऽ
नि – सां रें –	गं रें	सां – –	रें नि ध प
स ऽ ऽ ङ्ग ऽ	ऽ स	ख्वा ऽ ऽ	लें ऽ ले ऽ
प प नि ध प	– म	ग – –	म प म –
आ बी ऽ र ऽ	ऽ गु	ला ऽ ऽ	ऽ ल की ऽ
प सां नि ध प	मग म	[illegible] ग रे	नि़ सा ध़ नि़
को ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽ	ऽ ऽ री	झो ऽ ज ध
x	2	0	3

राग राम कली

रागो रामकलीति तु यत्र रिमधाः स्यु कोमला धैवतो ।
वादी रिस्तदमात्य ईरित इहारोहे मनौ वर्जितौ ।
सम्पूर्ण त्ववरोहणं निगदितं कैश्चिन्निषाद द्वयम्
प्रत्यूषे मधुरस्वरैः सुमतयो गायन्ति यं गायकाः ॥
(राग कल्प द्रुमाङ्कुः)

भैरव भैरवकी है राम कली वरजे मनि आरोहि
ओड़व समपूरण कही समपूरन अवरोहि

यह राग भैरव ठाट से उत्पन्न होता है।

आरोह अवरोह

सा ग, म प, ध॒ नि सां । सां नि ध॒ प म॑ प ध॒ नि॒ ध॒
प ग, म रे॒ सा ।

पकड़

ध॒ प, म॑ प, ध॒ नि॒ ध॒ प ग म, रे॒ सा

राग रामकली त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

ग म नि॒ ध॒	प ध॒ म प	ध॒ प - म	ऽ प ग म
ऽ ग म रे॒	ग म प ग	म प म ग	म ग रे॒ सा
नि॒ सा ग म	प ग ऽ म	सां नि ध॒ नि॒	ध॒ प ग म
0	3	+	2

अन्तरा

प प ध ध	सां ऽ नि सां	सां रें गं मं	रें रें सां ऽ
सां रें॒ सां नि	ध॒ नि॒ ध॒ प	ग म प ग	म ग रे॒ सा
नि॒ सा ग म	प ग ऽ म	सां नि ध॒ नि॒	ध॒ प ग म

रामकली त्रिताल स्थायी

गम नि ध॒ प	- ध॒ पम प	(प) - म -	(प) - म ग
ऽ ग रि रै	ऽ न केऽ ऽ	जा ऽ गे ऽ	पा ऽ गे ऽ
म ग म ग	रे॒ रे॒ म प	म ग म ग	रे॒ रे॒ सा -
मु च्छ ऽ च	तु र मु र	ज न का ऽ	व ल मा ऽ
नि॒ सा ग म	प - प -	पध॒ निसां सांरें सांनि	धनि धप मग म
मो ऽ र हि	मे ऽ रे ऽ	आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ये

अन्तरा

प प प प	ध॒ - नि नि	सां सां सां सां	नि सां सां सां
कि न गु ण	गा ऽ ल अ	प र प र	अ ऽ अ न
रें - गं मं	रें रें सां सां	पध निसां सांरें सांनि	धनि धप मग म
जा ऽ ब क	ति ल क ल	गाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ये
सां नि सां नि	ध नि ध प	म ग प मग	रे - सा सा
हे र टं ग	क व न ल	ती ऽ व ऽऽ	मा ऽ ग नि
नि॒ सा ग म	प प प -	पध निसां सांरें सांनि	धनि धप मग म
न न म न	ध न मो ऽ	ध्याऽ ऽऽ ऽऽ रऽ	कऽ राऽ ऽऽ ये
0	3	X	2

ता० २५-२-६६ की बिक्री

		कीमत
चाय पुड़िया	३ -	१५ पैसा
तेल कड़ुवा	३०० ग्राम	१-८० पैसा
नमक	आधा किलो	१० पैसा
सनलाइट साबुन		६२ पैसा
सर्फ	- - - - - -	१-६२
गुड़ -	१५० ग्राम	१५ पैसा
		४.४

बोली रामलीला दास के जीते ।।।/

ता० २६-२-६६ की बिक्री

बीड़ी	- - - -	५ पैसा
कड़ुवा तेल	१ छटाँक	२५ पैसा

रामकली धमार - (विलम्बित)

स्थायी

सां – – ध – | नि ध | प म प | म – ग –

धू ऽ ऽ म ऽ ऽ म | चा ऽ ऽ | ई ऽ ऽ ऽ

ग रे – ग म प प | म ग – | रे – सा सा

मो ऽ ऽ ह न क अ | नें ऽ ऽ | री ऽ अ ब

नि सा – ग – म – | प – – | ध – – ध

कें ऽ ऽ से ऽ ऽ ऽ | मा ऽ ऽ | न ऽ ऽ र

सां नि – – नि – | सां – ध – नि | ध प ग म

हे ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ गो ऽ

x | 2 | 0 | 3

अन्तरा

प प – ध ऽ – – नि | सां – सां | नि सां सां सां

अ बी ऽ र ऽ ऽ गु | ला ऽ ल | के ऽ स र

ध ध – नि – सां सां | रें – सां | नि सां ध, ध

पि च ऽ का ऽ रि अ | ने ऽ क | रं ऽ ग, क

सां – – नि सां | ध नि | ध प म | प – ग म

हे ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ गो ऽ

राग वसन्त

वसन्ततौ गेयो मृदुल ऋषभस्तीव्र सकल: ।
पहीनो मद्वन्द्व: समग पुनरावृत्ति रुचिर: ।।
सवादी मामात्योऽप्यह्नि निशिचाव्यहत गति: ।
स्थितस्तारे षड्जे स जगति वसन्तो विजयते ।।

दो मध्यम कोमल रिधव चढ़त न पञ्चम कीन्ह । (अल्प दुनाकुरे)
सम वादी संवादि ते यह वसन्त कह दीन्ह ।।

यह राग पूर्वी आश्रय से उत्पन्न हुआ है।

आरोह अवरोह

सा ग मंध रे सां । रें नि धु, प मंग मंग मंधु मंग रे सा.

पकड़

... रें सां रे निधुप मंग मंग

बसंत - त्रिताल (मध्यलय) स्थायी

सा ... नि धु प मंग मंधु सां - रें रें सां -
... ऽ मंग गं रें सां नि धु रें नि धु नि धु प
3 X 2

अन्तरा

... सा मंधु मं सां - सां नि रें सां ऽ मं गं रें सां
... धु नि धु प मं ग नि धु मं ग म ग रे सा
3 X 2

बसन्त त्रिताल (मध्यलय)
स्थायी

नि सा ग म नि ध रें नि ध प - मं ग ऽ मं ग
मं ध रें नि ध नि ध प मं ग ऽ मं ग रे सां -
3 x 2 0

अन्तरा

मं ध सां ऽ रें रें सां - नि रें गं मं गं रें सां ऽ
रें नि ध नि ध प मं ग मं ग - मं ग रे सा ऽ

बसन्त - त्रिताल (मध्यलय)
स्थायी

मध सां नि (प) - मंग मं ग मं ध नि सां रें - सां -
ऋ तु ब सं ऽ तऽ म न भा ऽ य न ख्वी ऽ ऽ ऽ
ध सां नि ध प - म ग मं नि मं गमं ग रे सा -
स ब मिल आ ऽ ज उ मं ग सौं भऽ ना ऽ वो ऽ
सा सा ग ग म ध सां - सां - निध नि - ध प मं
अ प ने प्री त म के ऽ सा ऽ ड़ऽ सा ऽ ड लवि
0 3 x 2

अन्तरा

मग मं ध सां सां सां सां सां - सां सां रें - सां सां
रं ग बे ऽ रं ग तन तऽ न सजा ऽ ब न
सां सां सां - रें रें सां - सां सां नि ध नि - ध ध
अ प ने ऽ घ र सां ऽ नि क स ऽ आऽ व त
ध नि रें मं ग रें सां सां सां - निध नि - ध प मं

बसन्त एकताल (मध्यलय)

स्थायी

नि	नि	सां	सां	नि	ध	नि	रें	नि	ध	-	प
फु	ल	वा	बि	न	त	न	ऽ	र	ड	ऽ	र
म	-	ध	नि	म	ग	म	ग	रे	रे	स	स
गो	ऽ	कु	ल	की	ऽ	ग	व	कु	मा	ऽ	री
स	-	स	म	ग	ग	म	ध	सां	सां	सां	सां
च	ऽ	न्द	व	द	न	च	म	क	त	हू	प
नि	-	सां	रें	(सां)	-	नि	ध	सां	नि	ध	प
मा	ऽ	नु	कि	श्री	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

म	-	ग	-	म	ध	सां	सां	सां	रें	-	सां
ने	ऽ	हो	ऽ	च	लि	च	लो	कु	मा	ऽ	रि
सां	सांनि	रें	-	सां	-	सां	नि	सां	नि	ध	ध
आं	पऽ	नो	ऽ	श्रों	ऽ	च	ल	न	मा	ऽ	रि
प	नि	रें	गं	गं	गं	मं	-	गं	रें	-	सां
आ	ऽ	ऐ	ऽ	कु	ञ्ज	च	ऽ	न्द	ना	ऽ	म
सां	-	रें	-	सां	सां	नि	ध	रें	नि	ध	प
रू	ऽ	धौ	ऽ	ड	ग	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
x		0		2		0		3		4	

वसन्त - त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

सां सां नि धु | प मं - ग | मं धु नि सां | रें - सां -
प न च ट | वा ठा ऽ दो | गा ऽ ई ऽ | री ऽ ऽ ऽ
- नि नि | मं धु मं ग मं | ग रे सा - | सा सा सा -
ऽ ऽ म न | मो ऽ हन ऽ | प्या ऽ रा ऽ | हू न मं न
मं धु नि सां | रें - सां - | नि - सां सां | नि धु नि मं धु
न ऽ ना च | ला ऽ वे ऽ | सै ऽ न न | की ऽ री ऽऽ
0 | 3 | × | 2

अन्तरा

मं - ग ग | मं - धु मं धु | सां - सां सां | रें - सां -
को ऽ र क | स ऽ पि नऽ | आ ऽ व त | आ ऽ है ऽ
सां - सां नि | रें - सां - | (सां) - नि धु | धु नि रें मं
पा ऽ र ऽ | पाऽ रु ऽ | डो ऽ ले ऽ | अ नि व ट
गं - रें रें | सां - सां - | नि - सां सां | नि धु नि मं धु
ह ऽ त ल | गा ऽ वे ऽ | न ऽ न न | की ऽ री ऽऽ।
0 | 3 | × | 2

वसन्त त्रिताल स्थायी

धु सां नि धु | प - म ग | मं धु नि सां | रें रें सां -
न इ प व | स ऽ न्त | न ई ऽ | न ब ल वि सां ऽ
नि रें - मं | गं रें - सां | नि - सां रें | (सां) - नि प
न ई ऽ न | ई ता ऽ न | गा ऽ व त | गो ऽ पि ऽ
0 | 3 | × |

अन्तरा

म ग म ध	नि - सं सं	सं - सं सांनि	रें - सं नि
न इ ये ऽ	नं ऽ श्री न	इ ऽ ऽ फूऽ	बाऽजन
नि रें गं गंमंरें	गंमं गं रें सं	नि - सं रें	(सं) - नि ध
न व लराऽऽ	ऽऽ छि का ऽ	झा ऽ नु कि	थोऽ रीऽ
नि सं निध			
न इ य..व.			
0	3	x	2

" मुद्गल जी का आत्म समर्पण "

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे, सुर नर मुनि सब होय सुखारे "

महामाया की प्रतिनिधि स्वरूपा सिद्ध योगिनी कमला सरकार जी आपने जो मुझे जन्म जन्मान्तरों का अनुरागी वा सदैव का सहयोगी जान उन्तालिस वर्ष पूर्व के देह भाव के सम्बन्ध को नया जन्म लेकर मेरे उद्धार हेतु कृपा करने को जो आप पधारीं इसका मैं महान आभारी हूँ इस महान असीम अनुकम्पा के लिये भूरि २ धन्यवाद देता हूँ आशा करता हूँ उद्धार की अन्तिम स्टेज तक मेरा हाथ न छोड़ा जावेगा

आपकी अनुग्रह का

दिनांक १७-१-१९६४

आकांक्षी स्वयम आपकी इच्छा का

बिरला नगर म. न. ४२

अनुरागी लक्ष्मी नारायण मुद्गल

ग्वालियर

विकराल दुर्गाष्टक

दैत्य संघारने वेद विचारन दुष्टन को तुमही खलतो हो, खंग त्रिशूल लिये धनुबान अौर सिंह चढ़ो रणमें लड़ती हो, दास के साथ सहाय सदां, सो दया करि ज्ञान फतेह करती हो। मोहि पुकारत देर भई जगदम्ब विलम्ब कहां करती हो। आदि कि ज्योति गणेश की मातु कलेश सदां जन के हरती हो ।।२।। कोऊ दैत्यन युद्ध भयो, तहं शोणित खप्पर ले भरती हो ।।३।। कि कहुं देवन रक्ष कियो, तहं धाय त्रिशूल सदां धरती हो ।।४।। सेवक से अपराध परो, कछु आपन चित्त में ना धरती हो, दास के कार्य सम्भार नित जन जानि दया को मया करती हो ।।५।। शम्भु के प्राण संघारन को जग तारन को तुम सिन्धु सेतो हो ।।६।। को तो गई बलि संग पताल कितो पुनि ज्योति प्रकाश गती हो, कोधौं काम परो हिंगलाजहि, सिन्धु के बिन्दु में जा छिपती हो ।।७।। युगुल भार धोर लवारन को बहु मारन को तुमहूं डरती हो ।।८।। बान सिरान कि सिंध हिरान कि ध्यान धर प्रभु को जपती हो ।। कोकहुं सेवक कष्ट परो तहं अष्ट भुजा बल दे लड़ती हो ।। सिंह चढ़े दोउ छत्र बिराजत, लाल ध्वजा रण लै फिरती हो ।।९।। दीव तुम्हारो करो विन्ती तुम काज करो सुनती हो। ब्रह्मा विशनु महेश कि हो कि सदां जग में फिरती हो ।।१०।। चंडी चंड हि जाय वधे अब जाय के शत्रु निपात गती हो। मार दियो महिषासुर को हरि केहरि को तुम ही पलती हो ।।११।। मधु कैटभ दैत्य विध्वंस कियो, नर देवन को तुम ईशपती हो। दुष्टन मार [illegible] कियो, निज दासन के दुख को हरती हो ।।१२।।

साधु . लगावत हैं तिनके तन को तुरतहि तरतो हो। जो जो ध्यान धरें तुम्हरा, तिनको प्रभुता चित दै करतो हो ॥१३॥ तेरो प्रताप तिहुं पुर में तुलसी जनको मनसा भरतो हो। होउ दयाल दया करिके जगदम्ब विलम्ब कहां करतो हो ॥१४॥

नमामि मंगले प्रमंगलादि की विदारिणी, नमामि भद्र कालिके प्रभद्र भाव धारिणी

स्थाई

0	3	x	2
– ध ध नि	ध म ग रे	म – म प	ग – रे सा
ऽ स्वा मि नि	तु म बिनु	कौ ऽ न ह	मा ऽ रौ ऽ
रे सा नि ध	सा – सा सा	म म प ग	म नि ध ध
अ श रं गा	को ऽ तु म	श र ण द	या ऽ म यी
ग म ध नि	सां सां ध नि	सां – नि ध	म ग रे सा
सु नि ये ऽ	ज न क दु	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रौ ऽ

अन्तरा

सां नि ध म	ग रे सा सां	सां सां नि ध	सां सां सा सां
सं सृ ति सिं	ऽ धु का ऽ	म ऽ क्रो ऽ	धा ऽ दि क

0	3	x	2
सां नि ध म	ग रे सा सां	सां – नि ध	सा – सां सां
सं सृ ति सि	ऽ न्धु का ऽ	म क्रो ऽ	धा ऽ दि क
ध नि सां मं	गं रें सां नि	सां नि सां रें	नि – ध –
न ऽ क्र मी	ऽ न भ ख	भा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
म ध ध नि	ध – म प	ग – म ग	रे – सा –
ज ऽ न्म अ	ने ऽ क नि	म ऽ ग त	हां हौं
नि सा ग म	ध – ध नि	सां – नि ध	म ग रे सा
कृ प या ऽ	लो ऽ ऽ उ	बो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ती ऽ

वागीश्वरी

स्थायी — स्वामिनि! तुम बिनु कौन हमारो।
अशरण की तुम शरण दयामयि! सुनिये जनक दुलारो॥

अन्तरा — संसृति सिन्धु काम क्रोधादिक, नक्र मीन झख भारी।
जन्म अनेक निमग्न तहाँ हौं, कृपया लेहु उबारी॥१॥
कासों विनय करौं तारणको, कौन समर्थ महारी।
सबहों बूड़ि रहे भव सागर, "प्रेम" है निपट गवाँरी॥२॥

॥ जयजय वन्ती ॥

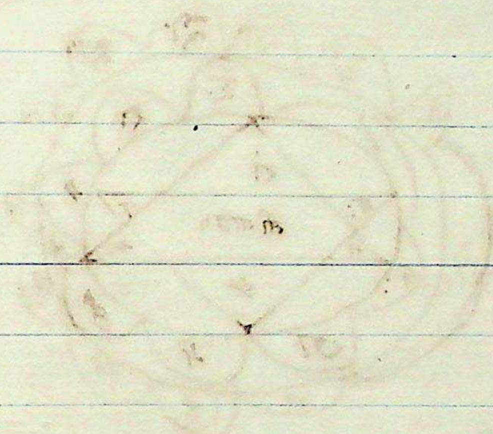
स्थायी — स्वामिनि, हम तेरी कब ह्वै हैं?
पल-पल छिन-छिन मनमधुकर कौं, चरण कमल निवसै हैं॥स्वा॥
महल-टहलमें दिवस-यामिनी, पलसम ताहि बितै हैं।
ह्वै निमग्न तव प्रेम-सिन्धु में कब तव ध्यान लगै हैं॥१॥
नयननते सब वस्तुजातमें तेरो दर्शन पैहैं।
गुनिहैं सकल तुम्हारी मूरति, कब ऐसी ह्वै जैहैं॥२॥
रसना रोपि नाम-नूतन तरु, अँशुवन नीर सिंचै हैं।
तन पुलकित मन विमल कण्ठ गद-गद यश तेरो गैहैं॥३
अपनो सुहृद, तात जननी गुरु, बन्धु मित्र तुव पैहैं।
मन वच कर्म तुम्हारी रुचि कौं सकल भाँति कब रखिहैं॥४॥
काम क्रोध लोभादि रिपुन ते गत विकार कब ह्वै हैं।
जानुहि कहौ तुम्हारी कब यह, साँची 'प्रेम' कहै हैं॥५॥

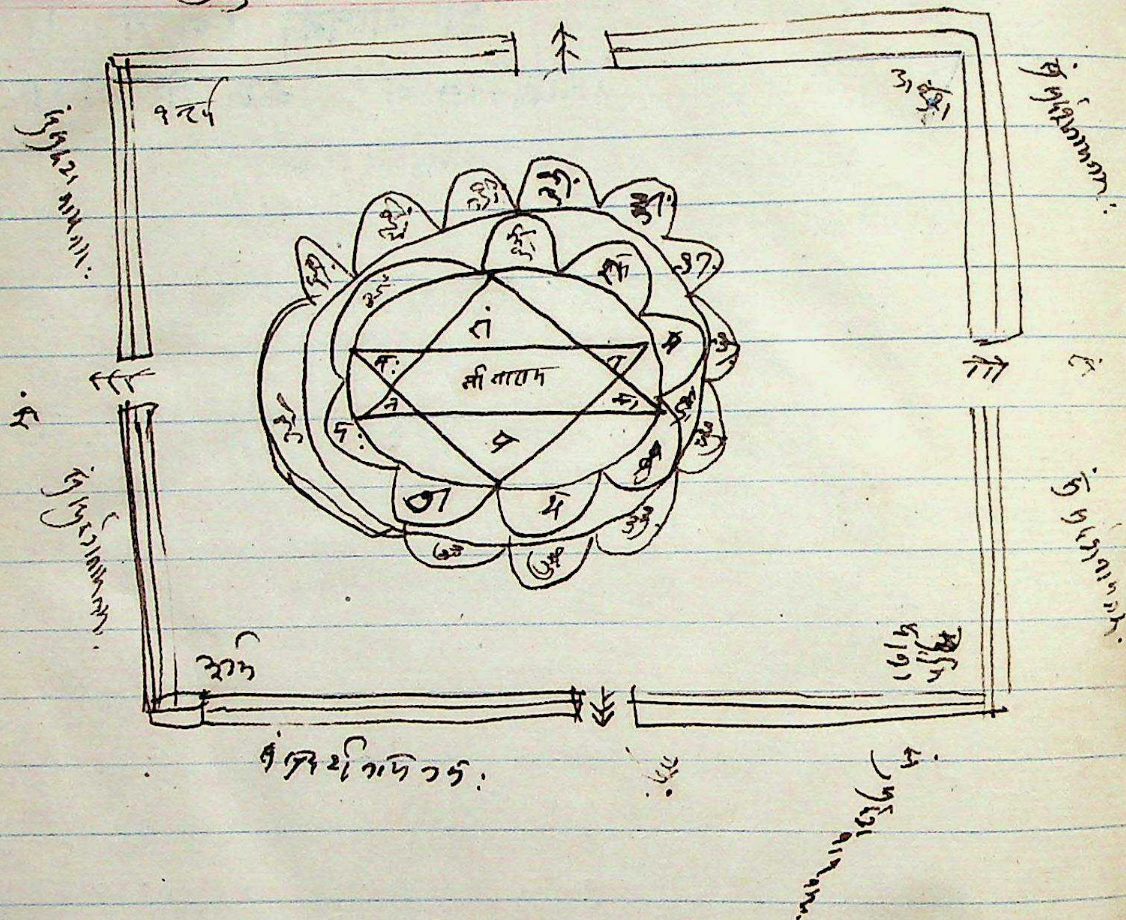
राग मालीगौरा

स्थाई

0	3	x	2
नि़	ध़ नि़ रे निध़	प़ – नि़ ध	सा नि़ रे ध़
क	क अ प ने	ऽ ठ उ	स्वा ऽ मि नि
ग रे सा,			
प्रे ऽ मा			

	3	x	
ध़	नि सा – सा	रे – मे –	प – रे –
ति	खि वा ऽ स	रऽ त व	च र क
ग रे सा, रे	मे मे प –	ध प नि ध	मे ग गमे धमे
मे ल मद म	न म धू	ऊर करि	र द ने ऽ
गम गरे सा			
मा ऽ ऽ			





गजल

अब ना विलम्ब करिये, श्रीस्वामिनी हमारी ॥
रघुवीर-प्राण-प्यारी, मिथिलेशकी कुमारी ॥१॥
बीते हैं जन्म मेरे हो काम-क्रोध-चेरे,
अपनाओ अब सबेरे, अवगुण सभी बिसारी ॥१॥
पापी जयन्त पर भी तुमने कृपा जो की थी,
क्या अब नहीं कृपा वह, है दीन पर तुम्हारी ॥२॥
लङ्काकी राक्षसीको तूने ही था बचाया,
बजरङ्ग वीर-बलसे, क्या नीति वह बिसारी ॥३॥
इस जन्ममें कभी भी, प्रेमा तुम्हारी होगी,
अविलम्ब अब बतादो, सर्वस्व मेरी प्यारी ॥४॥

श्रीशांधृयुद्गम शेषशारदभवाद्यावन्दितौ पाविनी
संसारभयनाशिनी भगवती श्याकीट ब्रह्मेडिता ।
दिव्यज्योतिमयी

बाबूजी ४०) देकर गये
कैसे खर्च हुआ !

२१-७ को २.५०.०० डाक्टर को दिया रामू ने
२२.७ को २.५० रु० डाक्टर को दिया ,,
२३.७ को २.२० की दवा खरीदा
२

बीदों का हिसाब

1.25 बिस्कुट [illegible]

2.00
2.20 रसीद कटवाँ राम् ने

4.45

10.00
4.45
6.55

20.00
17.20
2.80

7.80
1.60
.80
12.20

...थ।

हृदय ॥२॥

बिरहदवानल-जलत भक्त-हित, शीतल पवन मलय।
मोपर साधकौन परवकीवदला लेहु कथय ॥३॥
जो क्षण बिलग होत नेरी क्यों कहतो दशा गुणय।
प्रेम अली जीवित मृत अवतों, करहु जो तुमहि हचय ॥४॥

मनजी अनत कहुँ नहिं जैये ॥
निखिल दिव्यगुण-सिन्धु स्वामिनी जू में जाइ समैये ॥
चायत चित्तो विषयरस बहु दिन, कबहुँ नाहिं अघैये
घृत संयोग पाइ पावक ज्यों, बढ़त-बढ़त अधिकैये ॥१॥
परम सरल वत्सलतम स्वामिनी, अपनो धाम बनैये
लहिये दिव्य प्रेमरस नित नव पल सम आयु वितैये ॥२॥
अन्तहुँ पाइ अचल पद स्वामिनि पद पङ्कज अपनैये
प्रेम अली मकरन्द स्वाद लै अपनो भाग मनैये ॥३॥
२
समाई—

इक स्वामिनि ही बलमेरो।
नहिं अब रह्यो बुद्धि विद्यावल, धनजन-बल बहुतेरो ॥
महा अधम अतिनीच पतित हम, पापिन माँहि नरेरो ॥
पाप-ताप अपराध शापके, हौं निश्चित एक डेरो ॥
प्रेम अली सबही वल वञ्चित, स्वामिनि ही बल मेरो ॥

2

अरे ओ बहुवल्लभ निर्दय!
अश्मसार अरुवज्र परुष अति, अबहु तो होहु सदय ॥ १
कोमल तोहि कहत कुसुमहुँते, कवि, कोविद वा ऋषय।
मेरेहि बार कठोर अमित क्यों, हे काल कञ्ज-हृदय ॥ २॥
विरहदवानल-जलत ~~भक्त~~ भक्तहित, शीतल पवन मलय।
मोपर साधकौन प्रखकीवदला लेहु कथय ॥३॥
जो क्षण विलग होत तेरी क्या ? कहतो दशा गुणय।
प्रेम अली जीवित मृत अवतो, करहु जो तुमहिं ~~रु~~चय ॥४॥

Wireeins for me by My Goddess

Shri Swaminiji

प्रतिदिन १ स्कन्ध का पाठ केवल दशम स्कन्ध दो दिनमें।
बीचमें एक दिन विश्राम। फिर अमावस्यासे प्रारम्भ।
भोजन प्रतिदिन ३ बजे। आधा सेर। नैष्ठा(?) [illegible]।

6.00
2.40

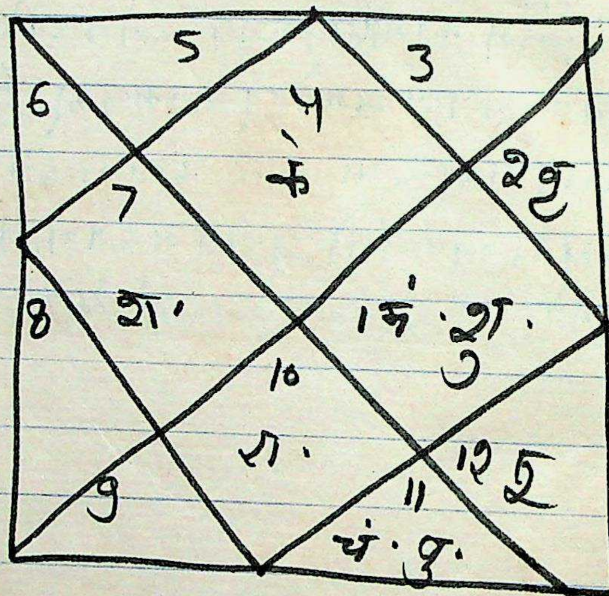
3.60

100
80

20

मनुआँ स्वामिनी हीको गुनिये।
साँची हितू तुम्हारी वेही, औनहिं अपनैये॥
मनवचकर्म निरन्तर रत ह्वै, उनहीमें रम जैये।
कलमष दलन विमलयश इनके श्रवणन तेनितसुनिये॥
मुनिदुर्लभ भवभीतिविनाशन, दर्शन इनके पैये।
श्वेतकञ्ज पदपद्ममनोहर मनमधुकर ह्वै जैये॥
सानुराग मकरन्द पानकरि अपनो आपु भुलैये॥
भव्य भवन भवसिन्धुपोत पदपंकजमें निर्भैयये।
संसृति द्वन्द दावव्याकुल श्री प्रेमहि आनि बिठैये॥

श्री
भग
ग
व
ती
ग
ङ्गा
जी



[illegible]

[illegible]

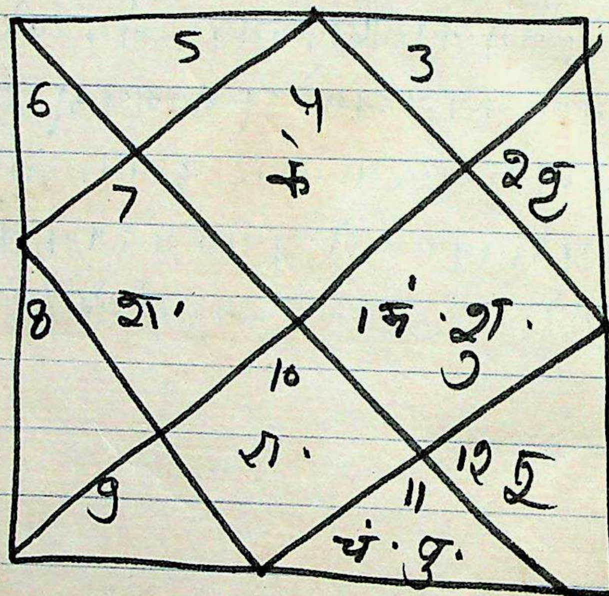
[illegible]

[illegible] Engineering

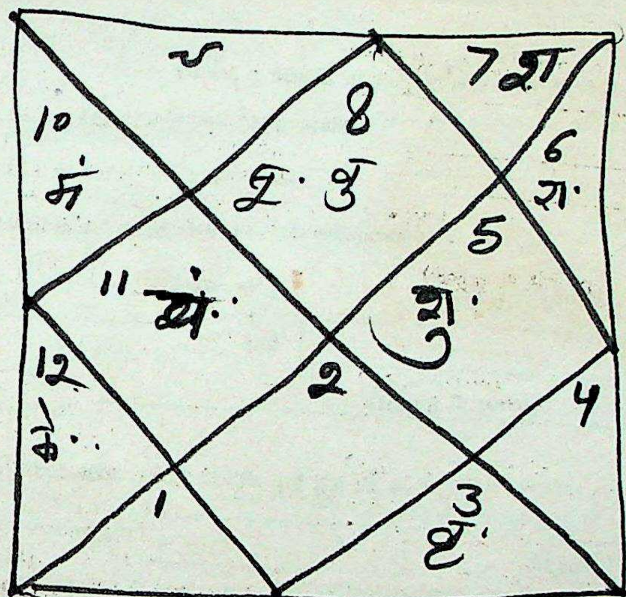
V. P. [illegible]

P. O. [illegible]

श्री
भग
ग
व
ती
ग
ङ्गा
जी



काम क्रोध लोभ मोह ... ते गति बिकाय है
... ऐसी साँची प्रेम करै है।



श्री

भग

बहु हैं

मन मधुकर कौ

॥

महल टहलनि दिवस यामिनी, पल पल बीते हैं। हौं ... तव प्रेम सिन्धु में ... ।

~~गुन मैं हूं॥ ...~~ ... ध्यान लागे हैं॥४॥

... तव ... तेरो दर्शन पै हैं

... सकल ... ऐसो ... हैं॥५॥

... भूतल ... आशु ... हैं

तन पुलकित मन विमल ... गई हैं

तेरौ ही ... हैं॥३॥

अपने सुहृद ... गुरु, बन्धु मित्र ... हैं।

... तेरौ ... कौ सकल ...

काम क्रोध लोभ मोह रिपु ते गति विकार ११ है
आयुर्वेद वि~~[illegible]~~ हेतु बल! तेरी साँची प्रेम करें हैं।

आयुर्वेद कहे [illegible] ११ पर

श्री [illegible]
Of Jakhodia Engineering Works
V. P. Khandelwal
P.O. Siwan Tannery
Kanpur

"ॐ शिवाय नमः"

ॐ श्री दुर्गा देवीभ्या नमः

ॐ भगवती देवीभ्यानमः ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा यस्मरेत पुण्डरी कांक्षं स बाह्याभ्यान्तर शुचि: (जल मस्तक पर छिड़कना)

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषि: सुतलं छन्द: कूर्मो देवता आसनोप वेसने विनियोग: (आसन के नीचे जल डालना)

पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वम च धारयते माम देवि पवित्रं कुरु चासनम । (आसन के चारों कोनों जल छिड़कना)

ऐं आत्म तत्वं शोधियामि नमः
ह्रीं विद्या तत्वं शोधि यामि नमः
क्लीं शिव तत्वं शोधि यामि नमः
ऐं ह्रीं क्लीं सर्व तत्वम शोधि यामि नमः ।

आसुरी कल्प प्रयोग

10,000 कुल जाप किए इसका दशांश हवन 2500, दशांश मार्जन 250.

मंत्र :-

ॐ ह्रीं कटुके कटुक पत्रे सुभगे आसुरी रक्ते रक्त वाससे अथर्वणस्य दुहिते अघोरे अघोर कर्म कारिके अमुकस्य ~~वससय~~ गतिम् दह-दह उप विष्टस्य गुदं दह-दह सुप्तस्य मनो दह-दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह-दह हन-हन, पच-पच ताव दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा ।

विनियोग :-

ॐ अंगिरा ऋषि विराट् छंदः, आसुरी देवता ॐ बीजम स्वाहा शक्ति हुं कीलकम् ममाभिष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

जल लेकर ~~पृथ्वी~~ पृथ्वी पर छिड़कना।

ऋषियादि न्यास :-

ॐ अंगिरा ऋषये नमः (शिरसि—सिर छूना) विराट् छंदसे नमो मुखे। आसुरी देवतायै नमो. हृदि - हृदय छूना)

ॐ बीजाय नमो लिंगे (लिंग छूना) ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः (पैर छूना)। ॐ हुं कीलिकाय नमो नाभौ (नाभि छूना)। ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे (सम्पूर्ण अंगों को छूना)

करन्यास :- ॐ ह्रीं कटुके कटुक पत्रे हुं फट् स्वाहा (अंगुष्ठाभ्यां नमः) ॐ सुभगे आसुरि हुं फट् स्वाहा (तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रक्ते रक्त वाससे हुं फट स्वाहा (मध्यमाभ्यां नमः) ॐ अथर्वणस्य दुहिते हुं फट् स्वाहा (अनामिकाभ्यां नमः) ॐ अघो अघोर कर्म कारिके हुं फट् स्वाहा (कनिष्ठकाभ्यां नमः) ~~अ~~ ॐ ओम प्रकाश मलिक(स्य) शक्तिं दह-दह उपविष्टस्य गुदं दह-दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन-हन पच-पच ताव दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा कर तल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि षडंगन्यास :- ॐ ह्रीं कटुके कटुक पत्रे हुं फट् स्वाहा

हृदयाय नमः (हृदय छूना) ॐ सुभगे आसुरी हुं फट् स्वाहा (शिरसे स्वाहा - सिर छूना) ॐ रक्ते रक्त वाससे हुं फट् स्वाहा (शिखायै वषट् - चोटी छूना) ॐ अथर्वणस्य दुहिते हुं फट् स्वाहा कवचाय हुं (दोनों कंधों को क्रास मिलाकर छूना) ॐ अघोरे अघोर कर्म करिके हुं फट् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्) ॐ अमुकस्य मलिकस्य गतिं दह-दह उपविष्टस्य गुदं दह-दह सुप्तस्य मनो दह-दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह-दह हन हन पच-पच तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा (अस्त्राय फट् - तीन बार ताली बजाना)

ध्यानम् :- ॐ शरद्-चन्द्र कांतिवर्णा भीति शूलं सृणि हस्त पद्मैर्दधानां भुजस्था। विभूषां वरदयाहि यज्ञोपवीता मुदेऽस्तु पुत्री करोत्वा सुरीनः।

ॐ भगवती देवीभ्यो नमः मां दुर्गे रक्षा करना और

कार्य सिद्धि करना।

- हस्ताक्षर

हृदयादि षडङ्गन्यास :-

ॐ ह्रीं कट्के कटक पत्रे हुं फट् स्वाहा

हृदयाय नमः (हृदय छूना) ॐ सुभगे आसुरी हुं फट् स्वाहा (शिरसे स्वाहा - सिर छूना) ॐ रक्ते रक्त वाससे हुं फट् स्वाहा (शिखायै वषट् - चोटी छूना) ॐ अथर्वशास्य दुहिते हुं फट् स्वाहा कवचाय हुं (दोनों कंधों को क्रास मिलाकर छूना) ॐ अघोरे अघोर कर्म करिके हुं फट् स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्) ॐ ओम प्रकाश मलिकस्य गतिं दह-दह उपविष्टस्य गुदं दह-दह सुप्तस्य मनो दह-दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह-दह हन हन पच-पच तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा (अस्त्राय फट् - तीन बार ताली बजाना)

ध्यानम् :- ॐ शरद्-चन्द्र कांतिर्वरा भीति शूलं सृणि हस्त पद्यैर्दधानां भुजस्था । बिभूषां वरदयादि यज्ञोपवीता मुदेऽथर्व पुत्री करोत्वा सुरीनः ।

ॐ भगवती देवीभ्यों नमः मां दुर्गे रक्षा करना और कार्य सिद्धि करना ।

- शुभम्

वं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं

खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं। ऐं क्लीं सौं बोलकर कलश में कारणा भरे।

कलश को लाल फूल माला छिड़कावे लाल चन्दन से विलेपन करे।

फिर कलश द्रव्य में चन्द्र मण्डल का पूजन करे। (ॐ सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने नमः) मन्त्र से पूजन करे।

द्रव्य में त्रिकोण उंगली से खींचे बीच में प्रेत बीज (हसौं मंडलाय नमः) भी लिखे उंगली से ही।

आनन्द भैरव का पूजन इस मन्त्र से करे। (मध्य में आनन्द भैरव भैरवी का ध्यान करे)

हसक्षमलवरयूं आनन्द भैरवाय वषट् सहक्षमलवरयीं आनन्द भैरवी वौषट् पादुकां पूजयामि नमः।

ॐ एक मेव परब्रह्म स्थूल सूक्ष्म मयं ध्रुवम । कचो द्भवाम ब्रह्म हत्यां तेन नाशयाम्यहम् ।
ॐ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि । तेन सत्येन हे देवि ब्रह्म शाप व्यपोहत् ॥ दस बार
३ बार = ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्म शाप विमोचितायै सुधा देव्यै नमः ॥३॥
३ बार = ॐ सूर्य मंडल सम्भूते वरुणालये सम्भवे अमा बीज मये देवि शुक्र शापादि विमुच्यताम् ॥
३ बार = ॐ शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्र शाप विमोचितायै सुधा देव्यै नमः ॥
३ बार = ॐ ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुरकृष्णा शाप बिमोचय २ अमृतं श्रावय २ स्वाहा ॥
३ बार = ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः रुद्र शाप विमोचितायै सुधा देव्यै नमः
१० बार - ॐ ह्रीं श्रीं आनन्देश्वराय विद्महे सुरादेव्यै धीमहि तन्नोऽर्धनारीश्वरः प्रचोदयात् ॥
३ बार = ॐ पवमानः परमानन्दः पवमानः परोरसः पवमानः परम ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम् ॥
३ बार = ॐ कृष्णा शापाद्विमुक्ता त्वम् विमुक्ता ब्रह्म शापतः विमुक्ता रुद्र शापाच्च पवित्रा भवसाम्प्रतम् ।
वेदोक्त = ह्रीं हसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषद् तिथिर दुरोण सत् । नृषद् वर सदृत सद्व्योम
है यह सदब्जा गोजा ऋतुजा ऋतं बृहत्
तिरस्कारी विद्या = नील हयं समधि रुह्य पुरः प्रयान्ति । नीलांशुकाभरणा माल्य विलेप नाढ्या । निद्रा पटेन भुवनानि
तिरोद्धाना खड्गायुधा भगवती परिपातु भक्तान् । ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवती माहेश्वरि सर्व पशुजन
मनश्चक्षु तिरस्कारणं कुरु २ स्वाहा । प्रार्थना ॥ ॐ ह्रीं परम प्रकाशनी परमाकाश शून्य निवासनी
सूर्य ~~[illegible]~~ चंद्राग्नि भक्षिणी पात्रं विश विश स्वाहा । अब विलोप मातृका करो

सम्वत् २०१४ ॥ शाके: १८७९ ॥ आश्वीन
मासे। कृष्णपक्षे षष्ठ्याम्। भौमवासरे ॥ आर्द्रा
नक्षत्रे तदुपरि पुनर्वसु नक्षत्रे इष्टकाल ३१।३४
प्रथम चरण। १७ सितम्बर १९५७ समय रात को

